



# नगर-व्यापी कलीसिया में दैवीय व्यवस्था

आशीष रायचूर

## केवल निःशुल्क वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बेंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।  
वर्तमान संस्करण: 2026

## संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,  
# 319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,  
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043  
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617

Email: [bookrequest@apcwo.org](mailto:bookrequest@apcwo.org)

Website: [apcwo.org](http://apcwo.org)

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं।

## आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया [apcwo.org/give](http://apcwo.org/give) पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

## निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें

उपदेश: [apcwo.org/sermons](http://apcwo.org/sermons) | पुस्तकें: [apcwo.org/books](http://apcwo.org/books) | चर्च ऐप: [apcwo.org/app](http://apcwo.org/app)

बाइबल कॉलेज: [apcbiblecollege.org](http://apcbiblecollege.org) | ई-लर्निंग: [apcbiblecollege.org/learn](http://apcbiblecollege.org/learn)

परामर्श सेवा: [chrysalislife.org](http://chrysalislife.org) | संगीत: [apcmusic.org](http://apcmusic.org)

मिनिस्टर्स फेलोशिप: [pamfi.org](http://pamfi.org) | एपीसी वर्ल्ड मिशनस: [apcworldmissions.org](http://apcworldmissions.org)

बाइबल-विश्वासियों की व्याख्या: [believersbiblecommentary.com](http://believersbiblecommentary.com)

(Hindi–Divine Order in the Citywide Church)

नगर-व्यापी कलीसिया में  
दैवीय व्यवस्था



## आभार

मैं ऑल पीपल्स चर्च, स्कूल ऑफ मिनिस्ट्री के विद्यार्थियों का धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने नगरव्यापी कलीसिया में दैवीय व्यवस्था के विषय पर उपयोगी चर्चाएँ कीं। मैं ऑल पीपल्स चर्च, बेंगलुरु के सेवकाई अगुवों का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने पांडुलिपि की समीक्षा करने और उपयोगी सुझाव प्रदान करने के लिए अपना समय निकाला। उनके इच्छुक सहभाग और उपयोगी अंतर्दृष्टि के द्वारा मैं आशीषित और उत्साहित हुआ हूँ। उनके सुझावों, टिप्पणियों और विचारों ने इस पुस्तक के प्रारंभिक कार्य को सुधारने में सहायता की और इसे अधिक पूर्ण बनाया।

निम्नलिखित लोगों ने प्रारंभिक पांडुलिपि की समीक्षा की और प्रेरणादायक सुझाव प्रदान किए।

ज़ाम्पे सलोमी, राकेश श्रीवास्तव, स्टीफन बेनी, रेजी वर्गीस, टीना वर्गीस, कुरियन कोशी, सी.एस.एन राव, जी. रत्नाकुमार, और एंड्रयू टेलर (ए.पी.टी फाउंडेशन)।



## विषयसूची

### परिचय

1. नगरव्यापी कलीसिया और स्थानीय कलीसियाएँ ..... 3
2. सेवकाई की नैतिकता ..... 17
3. विश्वासियों के रूप में उचित आचरण ..... 59
4. जहाँ व्यवस्था होती है, वहाँ वृद्धि होती है ..... 77



## परिचय

12 वर्ष की आयु में प्रचार करना आरंभ करते हुए, और जोश से भरा हुआ होने पर भी अधिक बुद्धि न होने के कारण, मैंने अपनी सेवकाई के प्रारंभिक दिनों में कई ऐसे कार्य किए जो वास्तव में दैवीय व्यवस्था के अनुसार नहीं थे। हम अपनी गलतियों से बहुत कुछ सीख सकते हैं, और यह उन्हीं तरीकों में से एक था जिसके द्वारा मैंने यह सीखा कि एक मसीही और परमेश्वर के सेवक के रूप में मुझे अपने आप को कैसे आचरण करना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप से उन कई बातों का दोषी हूँ जिनका उल्लेख मैं इस पुस्तक में करता हूँ, और जिनका उल्लंघन मैंने सेवकाई के प्रारंभिक दिनों में किसी न किसी समय पर किया था। मेरी हर एक गलती ने मुझे बहुमूल्य शिक्षाएँ दीं। मुझे अब भी प्रारंभिक वर्षों में अपनी प्रिय पत्नी, ऐमी से प्राप्त कुछ मूल्यवान सुधार याद हैं। प्रत्येक गलती के बाद, मुझे मन फिराना पड़ा, अपने आप को संभालना पड़ा, बुद्धिमान बनना पड़ा, और आगे बढ़ना पड़ा।

अब 25 वर्षों से अधिक समय तक सेवकाई में बने रहने के कारण, निश्चित रूप से व्यक्ति बहुत सी बातों का सामना करता है। भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, और कुछ अन्य देशों जैसे अल्बानिया, इक्वाडोर, मलेशिया, इंडोनेशिया, और फिजी के विभिन्न भागों में सेवकाई करते हुए, मुझे यह अवसर मिला, कि मैं प्रत्यक्ष रूप से देख सकूँ, अनुभव कर सकूँ, और सुन सकूँ कि विभिन्न स्थानों पर कलीसियाएँ, सेवक, और विश्वासी अपने आप को कैसे संचालित करते हैं। लगभग इन सभी स्थानों में, हमने सेवकों, कलीसियाओं, सेवकाइयों, और विश्वासियों के बीच कई ऐसी बातों को देखा है जो दैवीय व्यवस्था की समझ की कमी को प्रकट करती हैं। हम, परमेश्वर के सेवक और विश्वासी होने के नाते, अक्सर ऐसी बातें कहते और करते हैं जो दैवीय व्यवस्था के अनुसार

नहीं होतीं, अनुचित होती हैं, और अच्छे स्वाद के अनुरूप नहीं होतीं। संभव है कि यदि हम कलीसिया में दैवीय व्यवस्था की समझ प्राप्त करें, तो हम अपने आप को सेवकों और विश्वासियों के रूप में जिस प्रकार आचरण करते हैं, उसके प्रति इतने असावधान न रहें।

हम यह विश्वास करते हैं कि यदि परमेश्वर के लोग दैवीय व्यवस्था में चलना सीख लें, तो कलीसियाओं, सेवकों, सेवकाइयों, और विश्वासियों के बीच कम कलह, विभाजन, और प्रतिस्पर्धा होगी। इसलिए, यह पुस्तक बड़ी चिंता और एक सच्ची इच्छा के साथ प्रस्तुत की गई है, ताकि हमारे नगरों, समुदायों, और स्थानीय भौगोलिक क्षेत्रों में सेवकों, कलीसियाओं, और विश्वासियों के बीच दैवीय व्यवस्था स्थापित हो सके। इस पुस्तक में, हम नगरव्यापी कलीसिया के दृष्टिकोण से विषयों पर चर्चा करते हैं। परन्तु यही बातें किसी समुदाय, नगर, या किसी भी क्षेत्र के लिए समान रूप से लागू होती हैं जहाँ कलीसियाएँ, सेवक, सेवकाइयाँ, और विश्वासी एक साथ रहते और सहकर्मों के रूप में सेवा करते हैं। इस पुस्तक में प्रस्तुत निर्देश एक ही आधार से आते हैं—कि सब कुछ भले रीति से और व्यवस्था के अनुसार किया जाए।

हम यह समझते हैं कि परमेश्वर के बहुत से अद्भुत पुरुष और स्त्रियाँ हैं जिनके पास हमसे कहीं अधिक वर्षों का सेवकाई अनुभव है। वे उन विषयों पर बोलने के लिए अधिक योग्य हैं जिन्हें हमने यहाँ प्रस्तुत किया है। ऐसे परमेश्वर के सेवकों के प्रति उचित आदर और सम्मान के साथ हम इस कार्य को प्रस्तुत करते हैं। हमारी इच्छा है कि नगरव्यापी कलीसिया, और किसी भी समुदाय की कलीसिया, वैसी कलीसिया बने जैसी यीशु मसीह चाहते हैं, ताकि सब बातों में यीशु मसीह की महिमा हो!

यहोवा की सेना उन लोगों के द्वारा पहचानी जाती है जो अपनी-अपनी पंक्ति में बने रहते हैं और व्यवस्था से चलते हैं।

**योएल 2:7,8**

वे शूरवीरों के समान दौड़ते, और योद्धाओं की भाँति शहरपनाह पर चढ़ते हैं।  
वे अपने अपने मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपनी पाँति से अलग न चलेगा।  
वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपनी अपनी राह पर चलते हैं; शस्त्रों  
का सामना करने से भी उनकी पाँति नहीं टूटती।

**योएल 2:11**

यहोवा अपने उस दल के आगे अपना शब्द सुनाता है,  
क्योंकि उसकी सेना बहुत ही बड़ी है;  
जो अपना वचन पूरा करनेवाला है, वह सामर्थी है।  
क्योंकि यहोवा का दिन बड़ा और अति भयानक है;  
उसको कौन सह सकेगा?

दैवीय व्यवस्था हमारी प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

**नीतिवचन 30:27**

टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तौभी वे सब की सबदल बाँध बाँधकर चलती हैं;

जब भी हम अपने अनुभव साझा करते हैं, तो हम जानबूझकर  
व्यक्तियों या कलीसियाओं के नाम प्रकट नहीं करते, क्योंकि हमारा  
उद्देश्य किसी की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाना नहीं है। हमारा उद्देश्य इन  
उदाहरणों के द्वारा शिक्षा देना है, ताकि पवित्रशास्त्र का सत्य दैनिक  
जीवन में प्रासंगिक बनाया जा सके।

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर





नगरव्यापी कलीसिया  
और स्थानीय कलीसियाएँ

---



# 1

## नगरव्यापी कलीसिया और स्थानीय कलीसियाएँ

### सिंहासन कक्ष से नगरव्यापी कलीसिया का एक दृश्य

प्रकाशितवाक्य 1:10-20

<sup>10</sup>मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना,

<sup>11</sup>“जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिखकर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात् इफिसुस, और स्मुरना, और पिरगमुन, और थूआतीरा, और सरदीस, और फिलदिलफिया, और लौदीकिया को।”

<sup>12</sup>तब मैं ने उसे, जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिये अपना मुँह फेरा; और पीछे घूमकर मैं ने सोने की सात दीवटें देखीं,

<sup>13</sup>और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरुष को देखा, जो पाँवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए था।

<sup>14</sup>उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं।

<sup>15</sup>उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाया गया हो, और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था।

<sup>16</sup>वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।

<sup>17</sup>जब मैं ने उसे देखा तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा। उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, “मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूँ;

<sup>18</sup>मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।

<sup>19</sup>इसलिये जो बातें तू ने देखी हैं और जो बातें हो रही हैं और जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले।

<sup>20</sup>अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और

उन सात सोने की दीवटों का भेद: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएँ हैं।

### प्रकाशितवाक्य 2:1

“इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख “जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिये हुए हैं, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि

प्रभु यीशु स्थानीय कलीसियाओं के बीच में हैं और कलीसियाओं के बीच चलते हैं। सात तारे जो सात कलीसियाओं के “स्वर्गदूतों” को दर्शाते हैं, वे इन कलीसियाओं के पासवानों (चरवाहों) को संकेत करते हैं। “स्वर्गदूत” के लिए यूनानी शब्द (*angelos*) ‘एंजेलोस’ है, जिसका अर्थ है “संदेशवाहक; विशेष रूप से एक स्वर्गदूत; और इसके निहित अर्थ में, एक पासवान।” नए नियम के कई अन्य स्थानों पर, इसी शब्द का अनुवाद “संदेशवाहक” के रूप में किया गया है, जो मानवीय संदेशवाहकों के लिए प्रयोग हुआ है (लूका 7:24; लूका 9:52; याकूब 2:25)। इसलिए, हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि “सात तारे” जो सात कलीसियाओं के “स्वर्गदूत” हैं, वास्तव में स्थानीय कलीसियाओं के पासवान हैं, जिन तक संदेश पहुंचाया जाना था।

प्रभु यीशु स्थानीय कलीसियाओं के पासवानों को अपने दाहिने हाथ में थामे रखते हैं। स्थानीय कलीसियाओं के पासवान दैवीय रूप से सुरक्षित हैं और पृथ्वी पर मसीह के प्रतिनिधि हैं।

जब हम किसी नगर के विषय में सोचते हैं (जो मूल रूप से एक बड़ा भौगोलिक क्षेत्र होता है), तो हम जानते हैं कि वहाँ कई स्थानीय कलीसियाएँ होती हैं। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया जिसे प्रभु यीशु ने उस नगर में स्थापित किया है, उनके सामने उन सोने के दीपस्तंभों में से एक के समान है। प्रत्येक पासवान जिसे प्रभु यीशु ने इन स्थानीय कलीसियाओं में नियुक्त किया है, उनके दाहिने हाथ में उन तारों में

से एक के समान है। प्रभु यीशु दीपस्तंभों के बीच चलते हुए स्थानीय कलीसियाओं के सर्वोच्च निरीक्षक (अध्यक्ष) हैं। वह प्रत्येक कलीसिया के पासवान को उस कलीसिया के जीवन, कार्य, और सेवकाई के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं (प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3)।

मसीह का नगर में केवल एक ही शरीर है। नगर की कलीसिया मूल रूप से एक ही कलीसिया है, इस अर्थ में कि सभी विश्वासी एक ही कलीसिया—मसीह के शरीर—के भाग हैं। हम इस एक शरीर और एक कलीसिया को नगर में “नगरव्यापी कलीसिया” कहते हैं। यद्यपि केवल एक ही नगरव्यापी कलीसिया है, फिर भी मसीह ने स्वयं उस नगर में अनेक सोने के दीपस्तंभ (स्थानीय कलीसियाएँ) स्थापित किए हैं और अनेक तारे (स्थानीय कलीसियाओं के पासबान) नियुक्त किए हैं, ताकि वे इन कलीसियाओं की चरवाही करें। प्रेरित पौलुस स्थानीय कलीसियाओं को मसीह की कलीसियाएँ कहते हैं (रोमियों 16:16)। मसीह द्वारा नियुक्त सभी कलीसियाएँ मसीह की ही हैं।

इनके अतिरिक्त, मसीह ने अनेक सेवकाई के वरदान (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, शिक्षक, और सुसमाचार प्रचारक) और सेवकाइयाँ भी स्थापित की हैं, जो स्थानीय कलीसियाओं में सेवा करती हैं, या व्यापक रूप से मसीह के शरीर की सेवा करती हैं, या बिना उद्धार पाए हुए संसार तक पहुँचती हैं।

नगर में मसीह के शरीर को सही रूप से पहचानना महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक है कि नगर की कलीसिया को एक कलीसिया और एक शरीर के रूप में देखने में संतुलन रखा जाए, और साथ ही इसे कई मसीह-नियुक्त स्थानीय कलीसियाओं के रूप में भी देखा जाए, जिनमें मसीह द्वारा नियुक्त पासबान, विभिन्न सेवकाई के वरदान, और सेवकाइयाँ मिलकर कार्य कर रही हैं। किसी एक पक्ष की अनुचित समझ और अनुप्रयोग, अनुचित आचरण की ओर ले जा सकता है,

जिससे हानिकारक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं।

## दैवीय व्यवस्था को समझना

मसीह यह चाहते हैं कि सेवकों, विश्वासियों, और स्थानीय कलीसियाओं के बीच दैवीय व्यवस्था हो, ताकि वे नगर में एक शरीर के रूप में एकजुट होकर कार्य कर सकें।

बहुत से सेवक, पासबान, विश्वासी, और स्थानीय कलीसियाएँ दैवीय व्यवस्था को नहीं समझते। इसलिए, उनमें से प्रत्येक वही करता है जो उसे अच्छा लगता है और जो वह सही समझता है, और वह जानबूझकर या अनजाने में दैवीय व्यवस्था का उल्लंघन करता है। इसके परिणामस्वरूप नगरव्यापी कलीसिया में विभाजन, कलह, और चोट पहुँची है। अंततः इससे नगरव्यापी कलीसिया इतनी कमज़ोर और अप्रभावी हो जाती है कि वह यीशु के लिए नगर पर प्रभाव नहीं डाल पाती।

नए नियम में कई स्थानों पर हम देखते हैं कि स्थानीय कलीसिया में या स्थानीय कलीसियाओं के बीच दैवीय व्यवस्था के विषय में उल्लेख किया गया है।

### 1 कुरिन्थियों 7:17

जैसा प्रभु ने हर एक को बाँटा है, और जैसा परमेश्वर ने हर एक को बुलाया है, वैसा ही वह चले। मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही ठहराता हूँ।

“ठहराता हूँ” शब्द यूनानी शब्द (*diatasso*) ‘डियाटास्सो’ से आया है, जिसका अर्थ स्ट्रॉंग शब्दकोश के अनुसार है, “भली-भाँति व्यवस्थित करना; अर्थात् (विशेष रूप से) स्थापित करना, निर्धारित करना, नियुक्त करना, आज्ञा देना, देना, व्यवस्था में रखना, ठहराना।” इससे प्रेरित पौलुस के द्वारा व्यक्त प्रभु की यह इच्छा प्रकट होती है कि मसीह की सब कलीसियाओं में बातों को भली-भाँति व्यवस्थित किया

जाए और क्रम में रखा जाए। बातों को प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता कि हर कोई वही करे जो उसे सही लगे।

### 1 कुरिन्थियों 11:34

यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में खा ले, जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। शेष बातों को मैं आकर ठीक करूँगा।

एक बार फिर, 1 कुरिन्थियों 11:34 में, पौलुस उसी यूनानी शब्द (*diatasso*) 'डियाटास्सो' का प्रयोग करता है, यह व्यक्त करते हुए कि उसका उद्देश्य कुरिन्थुस की कलीसिया में बातों को व्यवस्था में लाना है।

### 1 कुरिन्थियों 14:33

क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।

यद्यपि इस पद का संदर्भ आत्मा के वरदानों के उचित उपयोग से है, विशेषकर अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी के विषय में, फिर भी यह पद हमारे परमेश्वर के विषय में एक सामान्य सत्य प्रकट करता है। भ्रम, अव्यवस्था, अराजकता, और अधर्म परमेश्वर से उत्पन्न नहीं होते। ये परमेश्वर के स्वभाव या उसके कार्यों की विशेषताएँ नहीं हैं। इसलिए, यह कहना सुरक्षित है कि भ्रम, अव्यवस्था, और अधर्म न तो स्थानीय कलीसिया में और न ही नगरव्यापी कलीसिया में स्वीकार्य हैं।

“शान्ति” शब्द यूनानी शब्द (*eirene*) 'एइरीने' से आया है, जिसका अर्थ है “(जोड़ना); शान्ति (शाब्दिक या रूपक रूप में); निहित रूप से समृद्धि—एकता, शान्ति, स्थिरता, विश्राम, फिर से एक होना।” सब पवित्र लोगों की कलीसियाओं में बातों का ठीक प्रकार से जुड़ा होना, एक होना, और मेल में होना आवश्यक है।

**[टिप्पणी:** 1 कुरिन्थियों 14 के संदर्भ के अनुसार, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी का उपयोग भी उस

अध्याय में दी गई दैवीय व्यवस्था के अनुसार हो। एक “अव्यवस्था” जो आजकल दिखाई देती है, वह है लोगों को जबरदस्ती अन्य भाषाओं में बुलवाने का प्रयास करना। यह ध्यान रखें कि भिन्न-भिन्न भाषाएँ आत्मा का एक वरदान हैं—पवित्र आत्मा की एक अलौकिक देन। यह कोई ऐसी भाषा या अजीब ध्वनियाँ निकालने की क्षमता नहीं है जिसे कोई दूसरे से सीखता है। इसलिए, लोगों को विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा का यह अद्भुत वरदान प्राप्त करने दें, बिना किसी के उनके शब्दों या ध्वनियों को उन पर थोपे जाने के।]

### 1 कुरिन्थियों 14:40

पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।

उसी संदर्भ में आगे बढ़ते हुए, प्रेरित पौलुस आज्ञा देता है कि कलीसिया के जीवन में जो कुछ भी होता है, वह भले रीति से (ईमानदारी से, नम्रता से, विचारशीलता के साथ) और व्यवस्था के अनुसार किया जाए।

इस पद में “व्यवस्था” के लिए एक अलग यूनानी शब्द प्रयोग किया गया है। (*‘taxis’*) *‘टैक्सिस’* शब्द का उपयोग किया गया है, जिसका अर्थ है “नियमित व्यवस्था, अर्थात् (समय के अनुसार) निश्चित क्रम (पद या स्वभाव का), आधिकारिक गरिमा: व्यवस्था।” इसलिए, स्थानीय कलीसिया में, और उसके विस्तार के रूप में नगरव्यापी कलीसिया में, निम्नलिखित बातों में व्यवस्था होनी चाहिए:

- प्रबंध—कार्य किस प्रकार किए जाते हैं
- समय—कार्य किस क्रम में किए जाते हैं
- पद, स्तर, या पदवी का आदर—अधिकार और अगुवाई में रहने वालों का सम्मान करना
- कार्यों को गरिमा के साथ करना

## कुलुस्सियों 2:5

यद्यपि मैं शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास की, जो मसीह में है, दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ।

“कुलुस्से में मसीह में पवित्र और विश्वासयोग्य भाइयों” (कुलुस्सियों 1:2) को लिखते हुए, पौलुस उनकी उस व्यवस्था (यूनानी ‘*taxis*’ टैक्सिस) के लिए आनन्दित होता है जिसे उन्होंने स्थापित किया और बनाए रखा है। इसलिए, व्यवस्था होना एक अच्छी बात है!

## तीतुस 1:5

मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।

तीतुस को कई नगरों की कलीसियाओं की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। प्रेरित पौलुस ने उसे यह निर्देश दिया कि जो बातें अधूरी थीं या जो बातें कमी में थीं या अनुपस्थित थीं, उन्हें ठीक व्यवस्था में लाए। “व्यवस्था” के लिए यूनानी शब्द (*epidiorthoo*) ‘एपिडियोर्थोओ’ है, जिसका सरल अर्थ है “और सीधा करना, अर्थात (रूपक रूप में) और व्यवस्थित करना: क्रम में लगाना।” इसलिए, पौलुस ने यह आवश्यकता देखी कि बातें सही क्रम और उसी प्रकार की सीध में लाई जाएँ, जैसे मसीह चाहते हैं। केवल नगरों में कलीसियाएँ और विश्वासियों के समूह स्थापित होना पर्याप्त नहीं था। बातों को व्यवस्थित करना आवश्यक था और आत्मिक प्राचीनों को नियुक्त करना भी आवश्यक था।

इसलिए, जिन पवित्रशास्त्र के अंशों पर हमने ऊपर विचार किया है, उनसे हमें बहुत सचेत होना चाहिए कि मसीह चाहते हैं कि उनकी स्थानीय कलीसियाएँ, सेवकाई करने वाले सेवक और उनके लोग दैवीय व्यवस्था में चलें।

दैवीय व्यवस्था का अर्थ निम्नलिखित है:

- कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें हमें पार नहीं करना चाहिए।
- एक आत्मिक अधिकार है जिसका हमें आदर करना चाहिए।
- काम करने का एक उचित तरीका है।
- एक उत्तरदायित्व है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।

जब सेवकाई करने वाले सेवक और विश्वासी, दैवीय व्यवस्था का पालन नहीं करते, तो इसका परिणाम अंततः झगड़ा, विभाजन और स्थानीय कलीसियाओं के एक होने के बजाय अलग होने में होता है। इससे नगर की कलीसिया कमज़ोर हो जाती है, क्योंकि *“यदि कोई घर अपने ही विरोध में बंट जाए, तो वह घर स्थिर नहीं रह सकता”* (मरकुस 3:25)। इसलिए नगर की कलीसिया कमज़ोर बनी रहती है और नगर पर स्थायी प्रभाव नहीं डाल पाती।

## परमेश्वर के घर में उचित आचरण

1 तीमुथियुस 3:14,15

<sup>14</sup>मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूँ,

<sup>15</sup>कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के घर में, जो कलीसिया है, व्यवहार करने का एक उचित तरीका है। बहुत से स्थानों पर हम, सेवकाई करने वाले सेवक और विश्वासी, कलीसिया में उचित आचरण के विषय में नहीं सिखाए गए हैं।

1 कुरिन्थियों 3:10

परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान

**राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।**

पौलुस ने एक बुद्धिमान वास्तुकार या मुख्य निर्माणकर्ता के रूप में, कुरिन्थुस की कलीसिया सहित कई कलीसियाओं की नींव डाली। उसने उन लोगों को, जो उसके बाद आए और जो प्रभु के घर के निर्माण के लिए उत्तरदायी थे, यह चेतावनी दी कि वे सुनिश्चित करें कि निर्माण ठीक प्रकार से हो। इसका अर्थ है कि प्रभु के घर को बनाने के सही और गलत दोनों तरीके होते हैं। यदि कोई व्यक्ति सावधान नहीं रहता और दैवीय व्यवस्था का पालन नहीं करता, तो वह गलत तरीके से निर्माण करने का प्रयास कर सकता है। तब हमारे पास ऐसा घर होगा जो व्यवस्था में नहीं है, अव्यवस्थित है, और विभाजन व झगड़े से भरा हुआ है।

## **चरवाहे और भेड़ों के बीच आत्मिक संबंध**

**प्रेरितों के काम 20:28**

इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

**इब्रानियों 13:17**

अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

एक पासवान होना और एक स्थानीय कलीसिया का सदस्य होना केवल अच्छे संदेशों का प्रचार करना और ऐसे स्थान पर जाना नहीं है जहाँ कोई आत्मिक रूप से पोषण पा सके। पवित्र आत्मा ही वह है जो लोगों के ऊपर पासवानों या आत्मिक अगुवों को ठहराता है। एक स्थानीय कलीसिया का भाग होने के नाते, हम उस चरवाहे की

देखभाल में सौंपे गए हैं, जिसे पवित्र आत्मा ने हमारे बीच ठहराया है। इसलिए, चरवाहे और भेड़ों के बीच एक आत्मिक संबंध स्थापित होता है।

पासवानों के रूप में, हमें स्वयं परमेश्वर के आत्मा द्वारा यह गंभीर ज़िम्मेदारी दी गई है, कि हम उन लोगों की देखभाल करें, जो हमें सौंपे गए हैं। हमारी ज़िम्मेदारी में भेड़ों को खिलाना, उनका पालन-पोषण करना, उन्हें तैयार करना, उनकी देखभाल करना, उनकी रक्षा करना और उनकी सेवा करना शामिल है। स्थानीय कलीसियाओं के सदस्यों के रूप में, विश्वासियों की भी अपने चरवाहे के प्रति एक परमेश्वर-नियुक्त जवाबदेही और ज़िम्मेदारी होती है, जिसे पवित्र आत्मा ने उनके बीच ठहराया है। विश्वासियों को आत्मिक अगुवाई के प्रति अधीनता और उस स्थानीय देह के प्रति प्रतिबद्धता सीखनी चाहिए, जहाँ उन्हें परमेश्वर ने उस समय तक के लिये रखा है जब तक वह ठहराए रखे।

ऐसा प्रतीत होता है कि हम में से बहुतों ने, चाहे पासवान हों या विश्वासी, स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में चरवाहे और भेड़ों के बीच संबंध के महत्व को नहीं समझा है। हम यह नहीं समझते कि इस आत्मिक संबंध को स्थापित करने की पूरी प्रक्रिया में स्वयं पवित्र आत्मा सम्मिलित हैं, और इसलिए, हमें इस संबंध को ऐसे तरीके से संभालना चाहिए जो उनके लिये आदरणीय और उन्हें प्रसन्न करने वाला हो।

## पूरक होना, न कि प्रतिस्पर्धा करना

रोमियों 16:16,17

<sup>16</sup> आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

<sup>17</sup> अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़

## लिया करो और उनसे दूर रहो।

प्रेरित पौलुस स्थानीय कलीसियाओं को “मसीह की कलीसियाएँ” कहकर संबोधित करते हैं। मसीह द्वारा ठहराई गई सभी कलीसियाएँ मसीह की ही हैं। मसीह की कलीसियाओं को एक-दूसरे का पूरक होने के लिये बुलाया गया है, न कि प्रतिस्पर्धा करने के लिये।

प्रत्येक स्थानीय कलीसिया की एक विशेष बुलाहट, एक विशेष दर्शन, और अपनी एक अलग “विशेषता” होती है। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया कुछ विशेष प्रकार के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये तैयार की जाती है और मसीह को विशेष तरीकों से प्रकट करने के लिये केंद्रित होती है। कुछ कलीसियाएँ दया की सेवा में अधिक सक्रिय हो सकती हैं, जबकि अन्य कलीसियाएँ मिशन पर अधिक केंद्रित हो सकती हैं। कुछ अन्य सुसमाचार प्रचारक हो सकती हैं, जो सैकड़ों और हज़ारों आत्माओं तक पहुँचने के लिये कार्य करती हैं। और कुछ अन्य सुसज्जित करने और भेजने पर केंद्रित हो सकती हैं, जो प्रेरितिक स्वभाव की होती हैं।

मसीह अपनी कलीसियाओं के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं चाहता। उसकी इच्छा यह है कि प्रत्येक कलीसिया एक-दूसरे का पूरक बने, ताकि पूरे नगर की कलीसिया खोई हुई आत्माओं तक पहुँचने और नगर में मसीह की महिमा करने के अपने उद्देश्य को पूरा कर सके।

यदि नगर की सभी कलीसियाएँ प्रभावी रूप से एक-दूसरे के साथ पूरक बनकर कार्य करें, तो इसके लिये दैवीय व्यवस्था को समझना आवश्यक हो जाता है, जिससे कि नगर की कलीसिया अपने समग्र उद्देश्य को पूरा कर सके।





सेवकाई की नैतिकता

---



## 2 सेवकाई की नैतिकता

स्थानीय कलीसिया में, स्थानीय कलीसियाओं के बीच, और चरवाहे तथा भेड़ों के संबंधों में दैवीय व्यवस्था के बाइबिलीय आधार को स्थापित करने के बाद, अब हम वास्तविक जीवन के विषयों पर विचार करना आरंभ करते हैं।

हम नगर की कलीसियाओं के बीच दैवीय व्यवस्था को कैसे बनाए रखें और उसका पालन कैसे करें?

हम मसीह के सेवकों—प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, पासबानों, शिक्षकों, और अन्य सेवकाई अगुवों—से आरंभ करते हैं, जो नगर में कार्य करने के लिए बुलाए गए हैं।

### सेवकों को मानक स्थापित करना चाहिए

#### 1 तीमुथियुस 4:12

कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

#### 2 तीमुथियुस 3:10,11

<sup>10</sup>परन्तु तू ने उपदेश, चालचलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दुःख उठाने में मेरा साथ दिया;

<sup>11</sup>और ऐसे दुःखों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे, और अन्य दुःखों में भी जो मैं ने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ा लिया।

हमारा जीवन अन्य विश्वासियों के लिए एक उदाहरण होना चाहिए कि परमेश्वर के लोगों को कैसे आचरण करना चाहिए। हमें लोगों को

यह देखने और सीखने देना चाहिए कि वे केवल हमारे उपदेश से ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन के ढंग से भी सीखें।

हम, नगर में मसीह के सेवकों को, दैवीय व्यवस्था सिखाई जानी चाहिए, जिसे हमें स्वयं भी व्यवहार में लाना है। हमें मानक स्थापित करना है और दैवीय व्यवस्था का पालन करना है। जब हम स्वयं दैवीय व्यवस्था का पालन नहीं करते, तो यह संभावना कम होती है कि जिन लोगों की हम अगुवाई करते हैं वे इसका पालन करेंगे।

हमें अपनी सेवकाई में निम्नलिखित बातों को स्मरण रखना और उनका पालन करना चाहिए:

- कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें हमें पार नहीं करना चाहिए।
- एक आत्मिक अधिकार है जिसका हमें सम्मान करना चाहिए।
- कार्यों को करने का एक उचित तरीका है।
- एक उत्तरदायित्व है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** परमेश्वर के सेवक के रूप में, आपको दैवीय व्यवस्था के पालन के लिए मानक स्थापित करना चाहिए।

## उन्नति और सुधार करना, न कि दुरुपयोग करना

1 तीमुथियुस 5:19,20

<sup>19</sup>कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।

<sup>20</sup>पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक सामान्य घटना बन गई है जहाँ पासवान मंच का उपयोग अपनी असुरक्षा, बुरी भावना, जलन और कुंठा को भले विश्वासियों और अन्य सेवकों के प्रति प्रकट करने के लिये करते हैं। कल्पना कीजिये, एक रविवार के संदेश के दौरान,

पासवान अपनी कलीसिया के किसी सदस्य के प्रति अपनी बुरी भावना को प्रकट करता है, जिसने किसी प्रकार उसे अप्रसन्न किया हो। निश्चय ही, पासवान उस व्यक्ति का नाम ले भी सकता है या नहीं भी ले सकता, परन्तु कलीसिया समझ जाती है कि पासवान किसके विषय में कह रहा है। यद्यपि कलीसिया इसे हँसी में उड़ा सकती है, परन्तु वह व्यक्ति आहत और घायल रह जाता है, और उसे स्पष्टीकरण देने का अवसर भी नहीं मिलता, जबकि उसने पाप भी नहीं किया हो। हो सकता है कि उसका स्वभाव पासवान से भिन्न हो या उसने कुछ विषयों पर पासवान के विचारों से सहमति न रखी हो। कुछ मामलों में, पासवान उस व्यक्ति की क्षमताओं के कारण स्वयं असुरक्षित महसूस करता है, आदि।

पासवानों के रूप में, हमें इससे ऊपर उठना चाहिए। हमें कभी भी ऐसे कार्यों के लिये अपने मंच का उपयोग नहीं करना चाहिए! मंच वह स्थान है जहाँ से हम चरवाहे मसीह की सेवकाई को पूरा करते हैं—अर्थात् उन्नति करने, मार्गदर्शन देने, चेतावनी देने और प्रेमपूर्वक सुधार करने के लिये। हम परमेश्वर के सेवकों को लोगों का दुरुपयोग करने के लिये मंच का उपयोग नहीं करना चाहिए।

जो पाप करते हैं, उन्हें हम केवल इस उद्देश्य से ताड़ना दें कि वे सुधरें और दूसरों को भी चेतावनी मिले, ताकि वे भी उसी पाप में न गिरें।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपने मंच का उपयोग उसके निर्धारित उद्देश्य के अतिरिक्त किसी भी कार्य के लिये कभी न करें।

## रक्षा करना, न कि नियंत्रण करना

1 पतरस 5:1-4

<sup>1</sup> तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ

<sup>2</sup> कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं पर मन लगा कर।

<sup>3</sup> जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो।

<sup>4</sup> जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।

## 2 कुरिन्थियों 1:24

यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

चरवाहों के रूप में, हमें उन लोगों के आत्मिक रक्षक होने की ज़िम्मेदारी दी गई है जो हमें सौंपे गए हैं। हमें अपने उत्तरदायित्व में आने वालों पर सावधानी से दृष्टि रखनी है, और फिर भी हमें उन पर प्रभुता नहीं जतानी है। “प्रभुता जताने” के लिये यूनानी शब्द (*‘katakuriueuo’*) *‘कटकुरियुओ’* है, जिसका अर्थ है “विरुद्ध प्रभुता करना, अर्थात् नियंत्रण करना, वश में करना: अधिकार चलाना (प्रभुता करना), स्वामी बनना, जीत लेना।” पासवानों के रूप में, हम लोगों के जीवन में नियंत्रण नहीं कर सकते, न ही उन्हें चलाने या निर्देशित करने के लिये दबाव डाल सकते हैं। हमें आत्मिक रक्षक बनना है, न कि नियंत्रित करने वाले या चाल चलने वाले।

यदि कोई पासवान अपनी कलीसिया के लोगों को यह बताने लगे कि किसे किससे विवाह करना चाहिए, किसी को कौन-सी नौकरी लेनी चाहिए, कहाँ जाना चाहिए और कहाँ नहीं जाना चाहिए, आदि—इस हद तक कि लोग पासवान के निर्देश के बिना कुछ भी न कर सकें—तो यह संकेत है कि कुछ गलत हो गया है। पासवान को लोगों का जीवन चलाने या उनके लिये जीवन जीने के लिये नहीं ठहराया गया है!

इस बात को और आगे बढ़ाते हुए, पासवान को विश्वासियों के व्यक्तिगत आत्मिक जीवन या सेवकाई को नियंत्रित नहीं करना चाहिए। पासवानों और सेवकों के रूप में, हमें परमेश्वर के लोगों को उनके आत्मिक जीवन और सेवकाई के विकास में तैयार करना, मार्गदर्शन देना और प्रोत्साहित करना चाहिए। हमें इन क्षेत्रों में उन्हें नियंत्रित नहीं करना है। इस सामान्य परिस्थिति पर विचार करें जहाँ हम में से बहुत से पासवान और सेवक ठोकर खाते हैं और ठोकर का कारण बन जाते हैं। मान लीजिये कि एक विश्वासी जिसका नाम रमेश है, स्थानीय कलीसिया में पूरी तरह जुड़ने से पहले ही परमेश्वर के लिये इतना उत्साह और जोश रखता था कि उसने अपने घर में साप्ताहिक प्रार्थना सभा शुरू कर दी। वह इसमें विश्वासयोग्य रहा और अपने घर में होने वाली साप्ताहिक सभाओं के माध्यम से उन लोगों की सेवा करता रहा जिन्हें परमेश्वर उसके पास भेजता था। कुछ समय बाद, उसने एक अच्छी स्थानीय कलीसिया के बारे में सुना, वहाँ गया और अंततः उसका भाग बनने का निर्णय लिया। इस समय पर, अधिकांश पासवान और कलीसियाएँ यह करती हैं: वे आकर रमेश की घर की प्रार्थना सभाओं को अपने अधीन ले लेती हैं या यह अपेक्षा करती हैं कि जब तक वह सभा पूरी तरह उस स्थानीय कलीसिया के पासवान के नियंत्रण में न आ जाए, तब तक उसे बंद कर दिया जाए। यह पासवानों और कलीसियाओं का अनुचित व्यवहार है, क्योंकि अधिकांश मामलों में इससे उस विश्वासी के पहले के उत्साह और जोश को दबा दिया जाता है।

रमेश ने अपनी घर की प्रार्थना सभा उस समय शुरू की थी जब वह स्थानीय कलीसिया का भाग भी नहीं था। उसे उस अच्छे कार्य को जारी रखने के लिये स्वतंत्रता और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जो उसने आरंभ किया। वास्तव में, पासवानों के रूप में, हमें रमेश को निरंतर तैयार करना चाहिए ताकि वह अपनी साप्ताहिक सभाओं के द्वारा अपनी सेवकाई में और भी अधिक फलवन्त हो सके। रमेश

अपनी साप्ताहिक घर की प्रार्थना सभाओं को स्थानीय कलीसिया के आवरण और पासवान की अगुवाई के अधीन लाता है या नहीं—यह निर्णय पूरी तरह रमेश पर छोड़ दिया जाना चाहिए। यदि वह ऐसा करना चाहता है, तो पासवान उस कार्य को समृद्ध करने के लिये जो कुछ आवश्यक हो, वह प्रदान कर सकता है। यदि रमेश स्थानीय कलीसिया या पासवान की सहभागिता के बिना अपनी साप्ताहिक सभाओं को जारी रखने का निर्णय लेता है, तो यह भी पूरी तरह स्वीकार्य है। कलीसिया और पासवान को रमेश की सहायता करते रहनी चाहिए और उसे समृद्ध करते रहना चाहिए, बिना उसकी घर की सभाओं में हस्तक्षेप किये, ताकि वह अपनी सेवकाई में और अधिक प्रभावी हो सके।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** परमेश्वर की भेड़ों की रक्षा करें, परन्तु उन्हें नियंत्रित न करें। उन्हें बढ़ने और परमेश्वर के राज्य के लिए फलवन्त होने की स्वतंत्रता दें।

## परमेश्वर के लोगों को सलाह देना

प्रेरितों के काम 20:28

इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

कभी-कभी, किसी विशेष स्थानीय कलीसिया के सदस्य विश्वासी, सलाह लेने के लिए अपने ही पासवान के बजाय किसी अन्य के पास जाने का निर्णय लेते हैं। यदि विश्वासी अपने पासवान से बात करने के बाद, उनके द्वारा किसी अन्य से सलाह लेने के लिए निर्देशित किए जाते हैं, तो बातें उचित व्यवस्था में हो रही हैं।

यदि किसी अन्य स्थानीय कलीसिया के सदस्य हमसे सलाह के लिए आते हैं, तो सबसे पहले हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि

उन्होंने अपने जीवन पर आत्मिक अधिकार रखने वाले व्यक्ति, जो सामान्यतः उनका पासवान होता है, से इन बातों पर चर्चा की है या नहीं। वह पासवान ही है जो अब तक उन्हें आत्मिक रीति से खिलाता और उनकी चरवाही करता रहा है। यदि वे अपने आत्मिक अगुवे (अपने पासवान या प्राचीन) से बात करने के बाद हमारे पास आए हैं, तो निश्चय ही हम उन्हें दी गई बातों में कुछ और जोड़ सकते हैं। परन्तु यदि उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें पहले उस पासवान के पास जाने के लिए निर्देशित करें जिसे पवित्र आत्मा ने उनके जीवन पर ठहराया है।

परन्तु हम, सेवक, अक्सर इस क्षेत्र में दैवीय व्यवस्था का पालन न करने के दोषी होते हैं। हम यह विचार किए बिना ही सलाह दे देते हैं कि क्या लोगों ने अपने पासवान से बात की है या नहीं। जब अन्य कलीसियाओं के विश्वासी, जो किसी पासवान की देखरेख में हैं, हमसे सलाह लेने आते हैं, तो हमारा पहला प्रश्न होना चाहिए, “क्या आपने इन बातों के विषय में अपने पासवान से बात की है?”

हमारे नगर की एक कलीसिया के एक युवक ने मुझसे संपर्क किया और उन समस्याओं के विषय में बताया जिनका वह अपनी कलीसिया में सामना कर रहा था, जहाँ उसका पासवान मंच से उसके विषय में टिप्पणी कर रहा था। मैं इस अवसर का उपयोग करके उसे यह समझा सकता था कि उसका पासवान गलत है, उसका दुरुपयोग कर रहा है, और उसे अपनी कलीसिया छोड़कर हमारी कलीसिया में आ जाना चाहिए। परन्तु मैंने उसे केवल यही सलाह दी कि वह वापस जाकर इस विषय में अपने पासवान से बात करे। अंततः उसने ऐसा ही किया। बातें सुलझ गईं और वह उसी कलीसिया में प्रसन्न है।

एक और युवक मुझसे मिलने आया। उसने अपनी चिंताओं और उस कलीसिया में जहाँ वह वर्तमान में था, असंतोष को व्यक्त किया।

मेरा पहला प्रश्न उससे यही था, “क्या तुमने इस विषय में अपने पासवान से बात की है?” उसका उत्तर था, “हाँ।” उसने आगे यह बताया कि वह अपने पासवान से जुड़ाव महसूस नहीं कर पा रहा था और यह भी कि उस कलीसिया में पासवानों का स्थानांतरण बहुत बार होता रहता था। इसलिए, यदि वह किसी प्रकार इस पासवान के साथ काम करना भी सीख लेता, तो उसे यह नहीं पता था कि यह स्थिति कितने समय तक बनी रहेगी, और फिर जब कोई नया पासवान आएगा तो उसे सब कुछ फिर से आरंभ करना पड़ेगा। एक पासवान के रूप में, मैं इस परिस्थिति का लाभ उठा सकता था और उसे हमारी कलीसिया में आने के लिए प्रेरित कर सकता था। मैं उसे अवसर, पद, और बहुत सी अन्य बातें देने का वादा करके उसे अपनी कलीसिया छोड़ने और हमारे पास आने के लिए मना सकता था। परन्तु मेरी सलाह उसे यह थी कि वह अपने सेवकाई बुलाहट में अपनी स्थिति को समझे, अपनी कलीसिया में वापस जाए, अपने पासवान और पासवान समिति के साथ इन बातों पर चर्चा करे, और फिर उचित निर्णय ले। यदि उसे फिर भी लगे कि उसे किसी अन्य स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनना चाहिए, तो मैंने उसे हमारे नगर की कई कलीसियाओं में जाने और फिर निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि किसी अन्य स्थानीय कलीसिया के सदस्य को सलाह देना गलत है। मैं यह कह रहा हूँ कि जब हम उन लोगों को सलाह देते हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने किसी अन्य की देखरेख में रखा है, तो हमें, सेवकों के रूप में, दैवीय व्यवस्था में चलना चाहिए। ऐसे विश्वासियों को पहले अपने पासवान या आत्मिक अगुवे से बात करनी चाहिए। ऐसा करने के बाद, उनके पासवान के निर्देश के साथ अन्य सेवकों के पास जाना उचित होगा। हमें, सेवकों के रूप में, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अन्य कलीसियाओं के विश्वासियों को सलाह देते समय इस दैवीय व्यवस्था का पालन किया जाए।

दूसरी ओर, कई पासवान लोगों को इतना नियंत्रित करते हैं कि वे उन्हें उचित रूप से योग्य और अनुभवी सेवकों से सलाह लेने से रोकते हैं। यह भी उचित नहीं है। यद्यपि पासवानों को अपनी भेड़ों की रक्षा करनी चाहिए, उन्हें उनसे इतना प्रेम करना चाहिए कि वे उन्हें उनकी आवश्यकता के समय अन्य सेवकों के पास जाने की अनुमति दें, जो उनकी सहायता कर सकते हैं। अक्सर, अपनी असुरक्षाओं के कारण, हम सेवक परमेश्वर के लोगों को सही व्यक्तियों के पास न भेजकर, जो उनके जीवन में योगदान दे सकते हैं, उन्हें सहायता प्राप्त करने से वंचित कर देते हैं।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** परमेश्वर के लोगों को सलाह देते समय आत्मिक नियमों का पालन करें। अपनी सीमाओं को पार न करें। इतना बड़ा मन रखें कि परमेश्वर के लोगों को अपने अलावा अन्य सलाहकारों के पास भी भेज सकें।

## झूठे दावे, बढ़ा-चढ़ाकर कहना, और उससे आगे

इफिसियों 4:25

इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

तीतुस 2:7,8

<sup>7</sup> सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता,

<sup>8</sup> और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके, जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।

कभी-कभी हम, जो सत्य के शिक्षक होने चाहिए, स्वयं झूठ और बढ़ा-चढ़ाकर कहने के दोषी हो जाते हैं, विशेषकर जब हमारी सेवकाई के फलों की बात आती है।

मैं स्वयं अपने प्रारम्भिक वर्षों में इस बात का दोषी रहा हूँ।

अमेरिका में रहते हुए, मैंने वहाँ के मिशनरियों के कार्य प्रस्तुत करने के तरीके को अपनाना शुरू कर दिया। चाहे कार्य छोटा ही क्यों न हो, पर जब तक चमकदार, रंगीन पुस्तिका तैयार होती और प्रस्तुति पूरी होती, तब तक किसी को भी यह विश्वास हो जाता कि यह मिशनरी किसी दूर देश में बहुत बड़ा और अद्भुत कार्य कर रहा है। जिस प्रकार से बातें प्रस्तुत की जाती थीं, वे अक्सर कई गुना बढ़ा-चढ़ाकर होती थीं। मैं यह नहीं कह रहा कि सभी मिशनरी ऐसा करते थे, परन्तु अधिकांश पुस्तिकाएँ और प्रस्तुतियाँ इसी प्रकार की होती थीं! मुझे याद है कि मेरी पत्नी ऐमी ने इस क्षेत्र में मुझे सुधारा, जब मैं अपनी सेवकाई की रिपोर्ट तैयार कर रहा था। ऐमी ने मुझे यह अंतर और इस बात का पूर्ण महत्व समझाया कि बिना किसी मिलावट या सजावट के, केवल सरल तथ्यों को ही प्रस्तुत करना चाहिए।

एक सेवक मुझसे मिला और उसने किसी दूसरे नगर में अपनी हाल ही की सेवकाई के बारे में मुझे बताया। उसने कहा कि "उस सभा में एक जागृति आरम्भ हो गई थी" जिसमें उसने सेवा की थी और "वह जागृति आज तक जारी है," जो कि लगभग 2-3 महीने बाद की बात थी। मुझे इस सेवक के साथ कुछ ही बार बात-चीत करने का अवसर मिला था और मैंने महसूस किया था कि वह सत्य बोलने वाला व्यक्ति नहीं है। इसलिए, जब मैंने उसे उस दूसरे नगर में जागृति के होने के विषय में कहते सुना, तो मुझे लगा कि वह पूरी तरह सत्य नहीं बोल रहा है। अगले दिन, मैंने उस दूसरे नगर के पासवान को फोन किया, केवल यह सत्यापित करने के लिये कि क्या इस सेवक ने जो कहा था वह सही है। उस नगर के पासवान ने पुष्टि की कि वास्तव में यह सेवक वहाँ 2-3 महीने पहले आया था और उसने सेवा की थी। उस सभा में कुछ सच्चे परिणाम हुए थे—कुछ लोगों का उद्धार हुआ और कुछ को छुटकारे मिले। परन्तु यह दावा करना कि एक जागृति आरम्भ हो गई थी और वह आज तक जारी है, यह एक बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया कथन था। क्या यह अधिक अच्छा नहीं होता यदि उस सेवक ने सरलता से यह कहा

होता कि जिस सभा में उसने सेवा की, उसमें तीन लोगों का उद्धार हुआ और एक व्यक्ति दुष्टात्मा के बंधन से छुड़ाया गया?

परमेश्वर के सेवकों, हमें ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ होना चाहिए जो सत्य बोलें, और केवल सत्य ही बोलें। आइए हम तथ्यों को वैसे ही प्रस्तुत करें जैसे वे हैं, बिना किसी बढ़ा-चढ़ाकर कहने या सजाने-संवारने के। यदि दस लोग उद्धार पाए, तो यही कहें कि दस लोग उद्धार पाए, यह न कहें कि “बहुत से लोगों ने अपने जीवन मसीह को दे दिए और बहुत ही अद्भुत प्रतिक्रिया हुई!” यदि आप मध्य पूर्व गए और कुवैत में प्रचार किया और वापस आ गए, तो बस यही कहें कि आप कुवैत गए और सेवा करके वापस आए, यह न कहें कि “मैं राष्ट्रों में गया और मैंने संसार के राष्ट्रों की सेवा की!” परमेश्वर के सेवकों, आइए हम झूठ और बढ़ा-चढ़ाकर कहने को दूर करें! आइए हम सत्य बोलें और सही वाणी वाले लोग बनें।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** बढ़ा-चढ़ाकर कहने और असत्य से बचें। अपनी वाणी को सत्य और संयमित रखें।

## भविष्यवाणी करना या ‘भविष्य-झूठ बोलना?’

यिर्मयाह 14:14

तब यहोवा ने मुझ से कहा, “ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यवाणी करते हैं, मैं ने उनको न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उनसे कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यवाणी करते हैं।

यिर्मयाह 23:21

“ये भविष्यद्वक्ता बिना मेरे भेजे दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे भविष्यवाणी करने लगते हैं।

जब परमेश्वर का कोई सेवक आत्मिक अनुभवों के विषय में झूठ बोलने और बढ़ा-चढ़ाकर कहने में संकोच नहीं करता, तो क्या आप

सोचते हैं कि ऐसा सेवक लोगों पर अपनी कल्पनाएँ भविष्यद्वाणी के रूप में बोलने में संकोच करेगा? यह कोई असामान्य बात नहीं है कि लोग स्वयं को भविष्यद्वक्ता घोषित करते हैं और विश्वासियों पर तरह-तरह की भविष्यवाणियाँ बोलते हैं।

ऐसा लगता है कि विश्वासियों पर इस प्रकार की बातें बोलना एक चलन बन गया है—जैसे, “परमेश्वर तुम्हें राष्ट्रों में ले जाएगा... और तुम्हें सामर्थी अभिषेक देगा... तुम यीशु और स्वर्गदूतों के दर्शन देखोगे... तुम्हें स्वप्न और प्रकाशन मिलेंगे... तुम्हारी महान सेवकाई होगी... तुम्हें भविष्यद्वक्ता के रूप में उपयोग किया जाएगा...” आदि। बताइए, कौन-सा विश्वासी ऐसी बातों में नहीं फँसेगा! और बताइए, कौन प्रतीक्षा करेगा यह देखने के लिये कि ये भविष्यवाणियाँ कभी पूरी होंगी भी या नहीं। बेचारा विश्वासी वर्ष दर वर्ष प्रतीक्षा करता रहेगा, अपने आप को उस भविष्यवाणी से उत्साहित करता रहेगा कि किसी दिन दर्शन, प्रकाशन, भविष्यद्वाणी की सेवकाई आदि पूरी होंगी! और उस “भविष्यद्वक्ता” को जाँचने या उसे उत्तरदायी ठहराने के लिये कोई नहीं होगा। यह इतना आसान उपाय है कि कोई भी स्वार्थी सेवक भोले-भाले विश्वासियों पर इसका उपयोग करने में संकोच नहीं करेगा!

कृपया समझें कि मैं भविष्यद्वाणी में विश्वास करता हूँ और उसकी इच्छा भी रखता हूँ। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उसके सभी लोग भविष्यद्वाणी करना सीखें। सच्ची भविष्यद्वाणी का प्रवाह अत्यंत अद्भुत है और यह एक बड़ा आशीष है। परन्तु इस क्षेत्र में होने वाले दुरुपयोग को संबोधित करना आवश्यक है, और हमें, सेवकों को, बातों को क्रम में लाना चाहिए।

परमेश्वर के सेवकों, हमें भविष्यद्वाणी करने के लिये बुलाया गया है, ‘झूठी भविष्यद्वाणी’ करने के लिए नहीं! यदि पवित्र आत्मा नहीं

बोलता, तो हमें चुप रहना सीखना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि लिखित पवित्रशास्त्र ही सबसे पहली भविष्यद्वाणी का वचन है, और हमें परमेश्वर के लोगों को लिखित वचन में स्थिर करना है। लिखित वचन हर विश्वासी के लिये पक्का आधार है।

हमें अपनी भविष्यवाणियों के प्राप्तकर्ताओं से कहना चाहिए कि वे जो कुछ हमने कहा है उसे परखें और जाँचें। हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने पासवान या आत्मिक अगुवों से उस भविष्यवाणी का मूल्यांकन करवाएँ, विशेषकर यदि वह उन्नति, प्रोत्साहन और शांति देने के क्षेत्र से बाहर की हो। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि जहाँ तक संभव हो, हम निजी स्थानों में भविष्यवाणी न दें, जहाँ अन्य आत्मिक रूप से परिपक्व लोग उपस्थित न हों जो कही गई बातों को जाँच सकें।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** भविष्यद्वाणी करें, “झूठी भविष्यद्वाणी” न करें।

## अपने आप को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रखें

फिलिप्पियों 2:1-5

<sup>1</sup>अतः यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स, और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है,

<sup>2</sup>तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।

<sup>3</sup>विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।

<sup>4</sup>हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

<sup>5</sup>जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;

मसीह के दो सेवकों के बीच एक बातचीत के दौरान, एक सेवक ने दूसरे सेवक से साझा किया कि उसकी कलीसिया के कुछ लोग उसके पास सेवकाई के लिए आए थे। उस सेवक ने यह भी बताया

कि उस समय उसने उन आगंतुकों पर भविष्यद्वाणी की, जिन्होंने उससे कहा कि यदि वे उसके बारे में पहले जानते, तो वे उसी के पास आते और उसकी सेवकाई का भाग बनते, बजाय इसके कि वे दूसरे पासवान की कलीसिया में जाते। अब ज़रा कल्पना कीजिए, यहाँ एक सेवक बहुत ही सूक्ष्म तरीके से दूसरे सेवक को उसके सामने ही छोटा दिखा रहा है! यह वास्तव में बहुत ही अनुचित था।

मैंने सोचा कि यह सेवक कितना असंवेदनशील था कि उसने ऐसा कथन किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम सेवकों के रूप में कितने वरदानयुक्त या अभिषिक्त हैं। हम सब मसीह में सहकर्मी हैं। परमेश्वर हमें उन तरीकों से उपयोग करेगा जिनमें उसने हमें वरदान और अभिषेक दिया है, ताकि लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। फिर भी, हम इसमें घमण्ड नहीं कर सकते और किसी दूसरे सेवक को गिरा नहीं सकते, जो उस समय उस व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयोग में नहीं आया।

परमेश्वर के सेवकों, हम कभी भी एक-दूसरे को तुच्छ न समझें। हम कभी भी किसी दूसरे सेवक से ऐसी बातें न कहें—“तुम पिछले वर्ष जितने अभिषिक्त नहीं हो” या “परमेश्वर तुम्हारा उपयोग सामर्थ्य से नहीं कर रहा है” या “तुम्हारी कलीसिया के सदस्य मेरे पास आए और मैंने उनकी सेवकाई की और सब कुछ ठीक कर दिया। तुम उनके लिए क्या कर रहे थे?” ऐसी बातें बहुत ही अनुचित हैं और दूसरों का निर्माण या उन्नति नहीं करतीं। ये केवल स्वयं को बढ़ावा देती हैं। परमेश्वर ने अपनी दया में किसी समय आपको किसी व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयोग किया होगा। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि आप किसी दूसरे सेवक के आत्मविश्वास या आंतरिक सामर्थ्य को गिरा सकते हो, जो उस परिस्थिति में उपयोग

में नहीं आया। बस अपने आप को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रखकर देखो और सोचो कि आपको कैसा लगेगा!

एक बार नगर की किसी अन्य कलीसिया की एक स्त्री ने मुझे फोन किया और बताया कि उसने एक भूमि का टुकड़ा खरीदा है और वह उस घर बनाने के लिए निर्माण शुरू करने और नींव डालने की तैयारी कर रही है। फिर उसने कहा, “पासवान, मैंने सुना है कि आप शुद्ध हाथों वाले व्यक्ति हैं। इसलिए मैं आपको आमंत्रित करना चाहती हूँ कि आप आकर घर के निर्माण का कार्य शुरू करें।” यह बहुत ही प्रशंसनीय और आकर्षक निमंत्रण था। परन्तु मैंने विनम्रता से इस निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया, और इसके कई कारण थे। पहला, यह स्त्री मेरी आत्मिक देखरेख में नहीं है। यद्यपि निर्माण का कार्य शुरू करने में कोई समस्या नहीं होती, परन्तु जो पासवान उसके जीवन में अब तक निवेश कर रहा है, यदि उसे यह सम्मान न दिया जाए, तो उसे कैसा लगेगा? दूसरा, मेरा समय सीमित है, और मैं उसे उन लोगों में लगाना चाहता हूँ जिनके लिए मैं सीधे उत्तरदायी हूँ और उन बातों में जो महत्वपूर्ण हैं। तीसरा, यदि यह स्त्री कल किसी कठिन परिस्थिति का सामना करती, तो वह अपने पासवान के पास जाती, न कि मेरे पास आती। इसलिए, यदि उसका पासवान उसकी समस्याओं में उसकी सहायता करने के लिए है, तो क्या उसे उसकी आशीषों में भी सहभागी नहीं होना चाहिए? अब, यदि वह अपने पासवान से बात करने के बाद और उसकी अनुमति लेकर मेरे पास आती कि मैं निर्माण का कार्य शुरू करूँ, तो इसमें कोई समस्या नहीं होती। अन्यथा, यह उत्तम है कि सब कुछ भले रीति से और व्यवस्था के अनुसार किया जाए।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपने सह-सेवक के प्रति विचारशील बनें। उनके लिये वही करें जो आप चाहते हैं कि वे आपके लिये करें।

## अपने भाई के विषय में आप क्या बोलते हैं, उसके प्रति सावधान रहें

1 शमूएल 26:9

दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे नष्ट न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है?”

1 शमूएल 26:11a

यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर उठाऊँ;

याकूब 3:8-10

<sup>8</sup>पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राणनाशक विष से भरी हुई है।

<sup>9</sup>इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं।

<sup>10</sup>एक ही मुँह से धन्यवाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

कभी-कभी हम, सेवक, अपनी बातचीत में खुले रूप से या सूक्ष्म रूप से अन्य सेवकों को नीचा दिखाते हैं, उनका अपमान करते हैं और उनकी निन्दा करते हैं। यह देखना आश्चर्यजनक है कि जब सेवक परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए जाते हैं, तो वे तुरंत सोचने लगते हैं कि सारी दुनिया उनके पैरों के नीचे है और वे अन्य सह-सेवकों के विषय में बुरा बोलने में संकोच नहीं करते।

जब हम दैवीय व्यवस्था में चलते हैं, तो हम एक-दूसरे की बुलाहट, वरदान और अभिषेक की विशेषता का आदर करना सीखते हैं। हमें अपनी सेवकाई को बढ़ावा देने के लिये किसी और की सेवकाई को गिराने की आवश्यकता नहीं है। यदि मसीह के सभी सेवक अपने नगर में अपने सह-सेवकों के विषय में क्या बोलते हैं, इस पर ध्यान दें, तो शत्रु को विभाजन और झगड़ा उत्पन्न करने का कम अवसर मिलेगा। नगर की कलीसिया बहुत अधिक मजबूत और स्वस्थ हो जाएगी।

परमेश्वर के सेवकों, आइए हम पवित्र भय के साथ चलें। आइए हम सदा याद रखें कि वही पवित्र आत्मा जो हमें अभिषेक करता है, हमारे सह-सेवकों को भी अभिषेक करता है। आइए हम कभी भी अपने सह-सेवकों के विषय में बुरा न बोलें।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपने सह-सेवक के विषय में कभी भी बुरा न बोलें।

## आलोचना को संभालना

रोमियों 12:16b-19

<sup>16</sup>... अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

<sup>17</sup>बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिंता किया करो।

<sup>18</sup>जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

<sup>19</sup>हे प्रियो, बदला न लेना, परन्तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, “बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।

2 कुरिन्थियों 6:3,4,8

<sup>3</sup> हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

<sup>4</sup> परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से,

<sup>8</sup> आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से। यद्यपि भरमानेवालों जैसे मालूम होते हैं तौभी सच्चे हैं;

यह लगभग निश्चित है कि परमेश्वर के प्रत्येक सेवक को आलोचना, झूठे आरोप, बदनामी, और ऐसी ही बातों का सामना करना पड़ेगा। जो बात और भी विचित्र तथा अत्यन्त दुखद होती है, वह यह है कि कभी-कभी यह बुरी रिपोर्ट या आलोचना सहकर्मी सेवकों और परमेश्वर के लोगों की ओर से भी आ सकती है। यहाँ तक कि जब हम सबके सामने आदरपूर्वक जीवन जीने और चलने

का पूरा प्रयास करते हैं, तब भी हमेशा कोई न कोई ऐसा होगा जो हमारे कार्य की सराहना नहीं करेगा और हमारे विरुद्ध कुछ न कुछ आरोप लगाएगा। इनमें से कुछ बातें जानबूझकर की जाती हैं, और कुछ केवल अज्ञानता के कारण होती हैं।

यद्यपि हम ऐसी बातों को रोक नहीं सकते, परन्तु हम यह नियंत्रित कर सकते हैं कि हम आलोचना, झूठे आरोप, बदनामी आदि के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। हमें बुद्धिमान होना चाहिए और यह स्मरण रखना चाहिए कि बुराई के बदले बुराई कभी न करें। हमें बिना बदला लिए और अपने आप को प्रतिशोध से बचाते हुए, सब मनुष्यों के साथ शान्ति बनाए रखने का पूरा प्रयास करना चाहिए। यही वह स्थान है जहाँ हमारे चरित्र की वास्तविक परीक्षा होती है। ऐसी परिस्थितियों में हमारी प्रतिक्रिया यह दर्शाएगी कि हम मसीह के समान बनने में कितनी प्रगति कर चुके हैं।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** आलोचना और झूठे आरोपों का उत्तर मसीह के समानता में देना सीखें।

## चापलूसी से सावधान रहें

याकूब 2:1-9

<sup>1</sup> हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह पर तुम्हारा विश्वास पक्षपात के साथ न हो।

<sup>2</sup> क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए, और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहिने हुए आए,

<sup>3</sup> और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुँह देखकर कहो, "तू वहाँ अच्छी जगह बैठ," और उस कंगाल से कहो, "तू यहाँ खड़ा रह," या "मेरे पाँवों के पास बैठ।"

<sup>4</sup> तो क्या तुम ने आपस में भेद-भाव न किया और बुरे विचार से न्याय करनेवाले न ठहरे?

<sup>5</sup> हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उस

ने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?

<sup>6</sup> पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया। क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें कचहरियों में घसीट घसीट कर नहीं ले जाते?

<sup>7</sup> क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाते हो?

<sup>8</sup> तौभी यदि तुम पवित्रशास्त्र के इस वचन के अनुसार कि “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख” सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो।

<sup>9</sup> पर यदि तुम पक्षपात करते हो तो पाप करते हो; और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है।

### 1 तीमुथियुस 5:21,22

<sup>21</sup> परमेश्वर, और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।

<sup>22</sup> किसी पर शीघ्र हाथ न रखना, और दूसरों के पापों में भागी न होना; अपने आप को पवित्र बनाए रख।

जिन क्षेत्रों में हमें, पासवानों और सेवकों को, अपने आप को सुरक्षित रखना चाहिए, वे हैं—विश्वासियों की चापलूसी और उन लोगों की पेशेवर, सामाजिक या आर्थिक स्थिति से प्रभावित होना जो हमारे पास आते हैं। विश्वासी जानबूझकर या अनजाने में हमारे सामने ऐसी बातें कह सकते हैं जो बहुत आत्मिक प्रतीत होती हैं, जिससे हमें लगता है कि वे प्रभु के प्रति बहुत समर्पित हैं। उनका समर्पण उनकी बातों से अधिक गहरा न भी हो सकता है। वे हमारे सामने स्वर्गदूतों के समान व्यवहार कर सकते हैं, परन्तु जब पासवान या प्राचीन उन्हें नहीं देख रहे होते, तब वे कैसे व्यवहार करते हैं, यह कोई नहीं जानता। सम्भवतः समझ की कमी के कारण, हम में से बहुत से लोग ऐसी बातों में “फँस” जाते हैं और ऐसे विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया में सेवकाई के प्रमुख स्थानों पर रख देते हैं। हम बिना परखे उन्हें आत्मिक ज़िम्मेदारियाँ सौंप देते हैं, यह देखे बिना कि वे वास्तव में कैसे हैं। जल्दी या देर से सच्चाई सामने आ जाती है, और कुछ मामलों में,

ऐसे विश्वासियों द्वारा बहुत अधिक हानि हो चुकी होती है। अन्य विश्वासी आहत और शोषित रह जाते हैं।

इसी प्रकार, हमें, पासवानों को, यह समझना चाहिए कि केवल इसलिए कि कोई व्यक्ति अपने पेशे में बहुत योग्य है या आर्थिक रूप से बहुत सफल है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह अपने आप मसीही सेवकाई के लिये उपयोगी होगा। किसी व्यापारिक संस्था में 50 लोगों की देखरेख करना, स्थानीय कलीसिया में 50 विश्वासियों की देखरेख करने से बहुत भिन्न है। यद्यपि कुछ नेतृत्व कौशल और लोगों के साथ व्यवहार करने के कौशल एक स्थान से दूसरे स्थान पर उपयोगी हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के लोगों का अगुवा बनने के लिये आत्मिक क्षमता की आवश्यकता होती है। यह ऐसी बात है जो व्यापारिक संसार में विकसित नहीं होती। फिर भी, अधिकांश पासवान बिना अधिक आत्मिक समझ का उपयोग किये, व्यापारिक संसार में लोगों की उपलब्धियों के आधार पर उन्हें आत्मिक ज़िम्मेदारियाँ सौंप देते हैं। यह बुद्धिमानी नहीं है।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** पक्षपात के द्वारा या आत्मिक समझ के बिना कुछ भी न करें।

## आत्मिक आवरण या आत्मिक दिखावा?

### 2 कुरिन्थियों 8:23

यदि कोई तीतुस के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी है; और यदि हमारे भाइयों के विषय में पूछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा हैं।

### 2 कुरिन्थियों 12:18

मैं ने तीतुस को समझाकर उसके साथ उस भाई को भेजा, तो क्या तीतुस ने छल करके तुम से कुछ लिया? क्या हम एक ही आत्मा के चलाए न चले? क्या एक ही लीक पर न चले?

“आत्मिक आवरण” एक ऐसा वाक्यांश है जिसका इतना अधिक उपयोग किया गया है कि ऐसा प्रतीत होता है कि उसका वास्तविक उद्देश्य खो गया है।

हम सेवकों के बीच समस्या यह है कि कई बार हम किसी प्रसिद्ध पासवान या कलीसिया के साथ अपने संबंध का दावा करते हैं, परन्तु वह केवल हमारे कहने तक ही सीमित होता है। उस पासवान या कलीसिया के प्रति कोई वास्तविक उत्तरदायित्व नहीं होता। यह अधिकतर एक आत्मिक दिखावा होता है, जिसका कोई वास्तविक व्यावहारिक मूल्य नहीं होता। हम अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करते रहते हैं और जब हमें सुविधा होती है या जब यह हमारे लिये लाभदायक होता है, तब हम किसी अन्य पासवान या सेवकाई के नाम का उपयोग करते हैं। परमेश्वर के सेवकों, आइए हम सेवकाई के संबंध या आत्मिक आवरण के झूठे दावे न करें, जब उसमें कोई वास्तविकता न हो!

नए नियम में, तीतुस को प्रेरित पौलुस की ओर से एक सहकर्मी और सहभागी सेवक के रूप में इतनी हृदयपूर्ण और हार्दिक प्रशंसा प्राप्त हुई थी। यदि हम उन लोगों से, जिनसे हम अपने आप को जुड़ा हुआ या सम्बंधित बताते हैं, ऐसी सिफारिश प्राप्त नहीं कर सकते, तो हमें उनके नाम का उपयोग करने का कोई अधिकार नहीं है! यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम किसी और के सम्मान को चुराने के दोषी हैं! किसी सेवकाई के नाम को धारण करने से अधिक महत्वपूर्ण यह बात है, कि उस सेवकाई के साथ हमारा संबंध कितना गहरा है। यदि कोई संबंध ही नहीं है, तो सेवकाई का संबंध केवल एक कागज़ के टुकड़े के समान है। तीतुस का प्रेरित पौलुस के साथ संबंध इतना सच्चा था कि पौलुस यह कह सका कि तीतुस उसी “आत्मा” में और उन्हीं “पदचिन्हों” में चला जैसे प्रेरित चला।

हे परमेश्वर, काश हम सेवक सच्ची उत्तरदायित्व को समझें। सच्ची उत्तरदायित्व की शुरुआत परमेश्वर के प्रति, अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति, और उन लोगों के प्रति उत्तरदायी होने से होती है जिनकी हम सेवा करते हैं। यदि हम इसमें असफल होते हैं, तो केवल नाम के आधार पर किसी अन्य सेवकाई के प्रति उत्तरदायी होना सम्भव नहीं है।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** किसी दूसरे व्यक्ति या किसी अन्य सेवकाई के सम्मान को न चुराएँ।

## वास्तव में धन कहाँ जाता है?

एक और "अव्यवस्था" जिसमें हम सेवक जानबूझकर या अनजाने में शामिल होते हैं, वह है धन को एकत्र करने और उसके उपयोग के विषय में। पासवान और सेवक लोगों से कहते हैं कि उन्हें किसी विशेष कार्य के लिए धन की आवश्यकता है। इसलिए, परमेश्वर के लोग उस उद्देश्य या कार्य के लिए धन देते हैं। परन्तु बहुत बार, वह धन, या उसका कुछ भाग, अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है, और जिन्होंने योगदान दिया है उन्हें इसके वास्तविक उपयोग के विषय में कोई जानकारी नहीं दी जाती। चाहे हम अपने कार्यों को कैसे भी उचित ठहराने का प्रयास करें, यह सही नहीं है।

यदि हम लोगों से कहते हैं कि हम एक अनाथालय के लिए धन एकत्र कर रहे हैं, और उसके स्थान पर उस धन को, या उसके कुछ भाग को, संगीत उपकरण खरीदने में उपयोग करते हैं, तो हमने लोगों को धोखा दिया है। जो पूरा धन अनाथालय के लिए दिया गया है, उसे उसी के लिए उपयोग किया जाना चाहिए और किसी अन्य कार्य के लिए नहीं। यदि किसी कारण से उस धन का कुछ भाग किसी अन्य कार्य में उपयोग करना आवश्यक हो, तो कम से कम लोगों को इसके विषय में अवश्य बताया जाना चाहिए।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** आपको सौंपे गए धन को संभालते समय ईमानदारी बनाए रखें।

## **कलीसियाओं को विश्वासियों को उत्तरदायी ठहराना चाहिए**

हर पासवान की इच्छा होती है कि उसकी कलीसिया संख्या में बढ़े। हममें से कुछ लोग इस बात की परवाह नहीं करते कि हम यह वृद्धि अपने क्षेत्र के अन्य सहकर्मी पासवानों की हानि पर कर रहे हैं। जब अन्य कलीसियाओं से लोग आगंतुक के रूप में आते हैं, तो हम उन्हें पकड़ लेते हैं और सीधे या परोक्ष रूप से उन्हें “स्थानांतरित” होने के लिए प्रेरित करते हैं। यह पासवानों के बीच एक अनुचित अभ्यास है।

कुछ कलीसियाओं में एक स्वस्थ अभ्यास होता है, जहाँ वे अपने आगंतुकों से स्पष्ट रूप से कहते हैं, “यदि आप पहले से किसी अन्य कलीसिया में जाते हैं जहाँ परमेश्वर का वचन बिना किसी समझौते के सिखाया जाता है, तो कृपया वहीं विश्वासयोग्य बने रहें। परन्तु यदि आप एक गृह कलीसिया की खोज में हैं, तो हम आपको फिर से आने और इस कलीसिया का भाग बनने के लिए प्रार्थना करने का निमंत्रण देते हैं।” वे यह स्पष्ट कर देते हैं कि वे अपने आगंतुकों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपनी कलीसिया के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। यदि वे देखते हैं कि आगंतुक नियमित रूप से आने लगे हैं, तो वे यह समझने का प्रयास करते हैं कि उन्होंने इस कलीसिया में आने का निर्णय क्यों लिया है, और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपनी पूर्व कलीसिया को अपने निर्णय के विषय में सूचित करें। यह एक उचित अभ्यास है, जो यह सुनिश्चित करता है कि कलीसिया परिवर्तन भी भले रीति से और व्यवस्था के अनुसार किया जाए।

कलीसियाओं को यह अभ्यास बनाना चाहिए कि वे लोगों को प्रभावित या बाध्य न करें कि वे उसी नगर में अपनी कलीसिया

छोड़कर किसी अन्य कलीसिया में आ जाएँ। फिर भी, लोग अपनी पूर्व कलीसिया को छोड़कर किसी अन्य कलीसिया में बसने का निर्णय ले सकते हैं, और इसके पीछे उनके पास ठोस कारण हो सकते हैं। ऐसे मामलों में, कलीसियाओं को विश्वासियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने पूर्व पासवानों और कलीसिया को अपने इस निर्णय के विषय में सूचित करें।

यहाँ हम जिस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं वह यह है, कि पासवानों के रूप में हमें विश्वासियों को “कलीसिया से कलीसिया घूमने” के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। हमें विश्वासियों को यह सिखाना चाहिए कि एक स्थानीय कलीसिया के साथ आत्मिक संबंध में प्रतिबद्ध रहना कितना महत्वपूर्ण है। यदि हम, पासबान, इस बात को लागू नहीं करते, तो हम “भटकते हुए विश्वासियों” की एक पीढ़ी तैयार करेंगे, जो कभी भी आत्मिक भवन में जीवित पत्थर नहीं बनेंगे, जिनके द्वारा राज्य के उद्देश्यों को पूरा किया जा सके।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** विश्वासियों को उत्तरदायी ठहराने से न डरें। उन्हें दैवीय व्यवस्था का पालन करना सिखाएँ।

## दूसरों के परिश्रम में प्रवेश करना

यूहन्ना 4:35-38

<sup>35</sup> क्या तुम नहीं कहते, ‘कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?’ देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।

<sup>36</sup> काटनेवाला मजदूरी पाता और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।

<sup>37</sup> क्योंकि यहाँ पर यह कहावत ठीक बैठती है: ‘बोनेवाला और है और काटनेवाला और।’

<sup>38</sup> मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया: दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।”

### 1 कुरिन्थियों 3:4-9

<sup>4</sup> क्योंकि जब एक कहता है, “मैं पौलुस का हूँ,” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस का हूँ,” तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

<sup>5</sup> अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।

<sup>6</sup> मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।

<sup>7</sup> इसलिये न तो लगानेवाला कुछ है और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर ही सब कुछ है जो बढ़ानेवाला है।

<sup>8</sup> लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।

<sup>9</sup> क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्म हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो।

यह एक राज्य का सिद्धांत है—परमेश्वर अक्सर किसी एक को बोने के लिये, किसी दूसरे को सींचने के लिये, और किसी और को फसल काटने के लिये उपयोग करते हैं। जब परमेश्वर हमें भेजते हैं, तो अधिकांश मामलों में हम दूसरों के परिश्रम में प्रवेश करते हैं।

इसलिए, हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि दूसरों के परिश्रम में कैसे प्रवेश करना है, और कैसे उन लोगों को, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है, हमारे परिश्रम में प्रवेश करने देना है। और हमें परमेश्वर के लोगों को भी इस सिद्धांत को समझाना चाहिए। अन्यथा, इससे विभाजन और झगड़ा उत्पन्न हो सकता है, जैसा कि कुरिन्थुस की कलीसिया में हुआ था।

कुरिन्थुस में क्या हुआ, इसका अध्ययन करना रोचक है। हम इसका विवरण प्रेरितों के काम 18 और 19 अध्यायों में पढ़ते हैं। पौलुस, अक्विला और उसकी पत्नी प्रिस्किल्ला ने लगभग दो वर्ष कुरिन्थुस में एक कलीसिया स्थापित करने में लगाए। फिर यह दल इफिसुस चला गया। वहाँ से पौलुस आगे बढ़ गया और अक्विला और प्रिस्किल्ला वहीं रह गए। वहाँ अक्विला और प्रिस्किल्ला की भेंट अपुल्लोस नाम के

एक व्यक्ति से हुई, जो प्रभु के मार्ग में शिक्षित था। “...प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया। जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें; और उसने वहाँ पहुँचकर उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।” (प्रेरितों के काम 18:26,27)। अपुल्लोस को अक्विला और प्रिस्किल्ला की सिफारिश से कुरिन्थुस की कलीसिया में भेजा गया। इस प्रकार, अपुल्लोस ने पौलुस, अक्विला और प्रिस्किल्ला के परिश्रम में प्रवेश किया।

बाद में, कुरिन्थुस के विश्वासियों ने पक्ष लेना शुरू कर दिया—कुछ कहने लगे कि वे पौलुस के हैं और कुछ कहने लगे कि वे अपुल्लोस के हैं। पौलुस ने उनके शारीरिक व्यवहार के लिये उन्हें डाँटा। उसने यह स्पष्ट किया कि वे विश्वासी “परमेश्वर का खेत” और “परमेश्वर की इमारत” हैं। पौलुस और अन्य केवल सहकर्मी थे, जिन्हें परमेश्वर “परमेश्वर के खेत” और “परमेश्वर की इमारत” में कार्य करने के लिये उपयोग कर रहा था।

विश्वासी “परमेश्वर का खेत” और “परमेश्वर की इमारत” हैं। परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि जब हम दूसरों के परिश्रम में प्रवेश करते हैं, तो “परमेश्वर के खेत” और “परमेश्वर की इमारत” में कार्य करते समय उचित आचरण क्या है।

जब हम दूसरों के परिश्रम में प्रवेश करते हैं, तो हमें कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

- हमें यह कार्य उन लोगों के आशीष और स्वीकृति के साथ करना चाहिए, जिन्होंने उसी क्षेत्र और कार्य में परिश्रम किया है या कर रहे हैं। उदाहरण के लिये, हम किसी कलीसिया में जहाँ कोई अन्य

सेवक पासवान है, बस यूँ ही जाकर अधिकार नहीं ले सकते। यह उचित आचरण नहीं है।

- हमें यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि अब तक क्या कार्य हो चुका है, ताकि हम उसी पर निर्माण कर सकें। ऐसा न हो कि हम कुछ ऐसा कर बैठें जिससे पहले से बोए गए अच्छे बीज उखड़ जाएँ या जो पथर सही क्रम में रखे गए हैं, वे गिर जाएँ।
- हमें अपनी सीमाओं में रहना चाहिए। हमें अपने अधिकार या उस कार्य से आगे नहीं बढ़ना चाहिए जिसके लिये हमें बुलाया गया है। उदाहरण के लिये, हमें किसी स्थानीय कलीसिया में जाकर पासवान को यह नहीं बताना चाहिए कि उन्हें क्या प्रचार करना चाहिए या कैसे सेवा करनी चाहिए। यह हमारी बुलाहट के बाहर है।
- हमें हर उस व्यक्ति का आदर करना चाहिए, जिसे आदर देना चाहिए। यदि परमेश्वर ने हमें फसल काटने के लिये भेजा है, तो यह स्मरण रखें कि जिन्होंने बोया और सींचा है, उन्हें आदर दें। और सबसे बढ़कर, यह याद रखें कि बढ़ोतरी परमेश्वर से ही आती है।

इसी प्रकार, सेवकों के रूप में, हमें इतना बड़ा होना चाहिए कि हम दूसरों को भी अपने परिश्रम में प्रवेश करने दें।

- हमें उस कार्य की रक्षा करनी है जो अब तक स्थापित किया गया है। इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हम किसे अपने परिश्रम में प्रवेश करने देते हैं। हम नहीं चाहते कि कार्य नष्ट हो जाए।
- हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन्हें हम अपने परिश्रम में प्रवेश करने देते हैं, वे वास्तव में उस पर निर्माण कर सकें जो पहले से बनाया गया है। कभी-कभी, पासवान किसी अन्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा आदि के कारण उसे “परमेश्वर के खेत” और “परमेश्वर की इमारत” में सहकर्मि बनने के लिये आमंत्रित करते हैं, बिना यह

समझे कि क्या उस व्यक्ति में वास्तव में आगे निर्माण करने की क्षमता है या नहीं।

- समय महत्वपूर्ण है। यदि बोनो का समय है, तो काटने वाले को न बुलाएँ! और यदि काटने का समय है, तो बोनो वाले को न बुलाएँ! यह जानें कि “परमेश्वर का खेत” किस समय में है।
- जब हमें पता चल जाए कि सही व्यक्ति (या अनेक व्यक्ति) हमारे साथ सहकर्म बनने या हमारे परिश्रम में प्रवेश करने के लिये आए हैं, तो हमें उन्हें पूरे मन से स्वागत करना चाहिए। हमें बाधा नहीं बनना चाहिए। हमें जितना संभव हो, उनके मार्ग से हट जाना चाहिए ताकि वे वह कार्य कर सकें जिसके लिये परमेश्वर ने उन्हें भेजा है।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** यह समझें कि परमेश्वर अक्सर एक व्यक्ति को बोनो, दूसरे को सींचने, और किसी अन्य को फसल काटने के लिये उपयोग करता है। “परमेश्वर के खेत” और “परमेश्वर की इमारत” के एक अच्छे भण्डारी बनें, बिना उस कार्य में बाधा डाले या उसे नष्ट किये जो परमेश्वर कर रहा है।

## अतिथि वक्ता के रूप में सेवा करना

“परमेश्वर के घर में कैसे व्यवहार करना चाहिए” (1 तीमुथियुस 3:15) को समझने का एक और महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जब हमें किसी अन्य कलीसिया में अतिथि सेवक के रूप में आमंत्रित किया जाता है, तब सीमाओं को समझना। यह असामान्य नहीं है कि जब किसी व्यक्ति को स्थानीय कलीसिया में बोलने के लिये बुलाया जाता है, तो वह पूरी सभा का नियंत्रण अपने हाथ में ले लेता है, और स्थानीय पासवान को एक ओर कर देता है, और कलीसिया के लिये दिशा और दर्शन देना शुरू कर देता है। यह पूरी तरह अनुचित है और दैवीय व्यवस्था के अनुसार नहीं है।

जब प्रभु यीशु स्थानीय कलीसिया को दिशा, दर्शन और व्यवस्था देना चाहते हैं, तो वह उसी दैवीय क्रम के अनुसार करते हैं जिसे उन्होंने स्थापित किया है। अधिकांश मामलों में, वह पासवान से बात करते हैं या उन लोगों के माध्यम से बोलते हैं, जिन्हें उस स्थानीय देह में आत्मिक अधिकार प्राप्त है—या तो वे जो प्रेरितिक स्थापना दल का भाग हैं, या वे जो उस कलीसिया की आत्मिक देखरेख में हैं। स्थानीय कलीसिया की आत्मिक देखरेख करने वाले, सामान्यतः वे होते हैं जिन्हें पासवान ने इस कार्य के लिये आमंत्रित किया होता है, या जिनके पास पासवान स्वयं मार्गदर्शन के लिये जाते हैं।

एक अतिथि सेवक को दैवीय व्यवस्था को समझना चाहिए, और स्थानीय कलीसिया में सेवा करते समय अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। अतिथि सेवक को स्थानीय पासवान के अधीन कार्य करना चाहिए, जो स्वयं मसीह के अधीन स्थानीय कलीसिया के प्रधान होते हैं। जो अतिथि सेवक उस कलीसिया पर आत्मिक अधिकार नहीं रखता, उसे स्थानीय कलीसिया को दिशा, दर्शन या व्यवस्था देने से बचना चाहिए। यदि किसी बात का प्रकाशन अतिथि सेवक को दिशा, दर्शन या व्यवस्था के विषय में मिलता है, तो उसे पहले निजी रूप से स्थानीय पास्टर के साथ उस विषय में चर्चा करनी चाहिए। पास्टर उस ज्ञान के वचन या बुद्धि के वचन को अपने पास रख सकता है और बाद में उस पर कार्य करने का निर्णय ले सकता है, या पासवान अतिथि सेवक को उस वचन को सभा के सामने देने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। तब अतिथि सेवक, पासवान की अनुमति प्राप्त करके ऐसा कर सकता है।

हम यह समझते हैं कि ऊपर दिए गए निर्देशों के लिए हम अध्याय और वचन का सीधा उल्लेख नहीं कर सकते। फिर भी, हमें विश्वास है कि ये निर्देश दैवीय व्यवस्था के संपूर्ण सार के अनुरूप हैं। यह परमेश्वर के घर में अच्छे आचरण की ओर ले जाता है।

अतिथि सेवकों के रूप में, हमें यह समझना चाहिए कि स्थानीय कलीसिया अपनी आत्मिक यात्रा में कहाँ है। हमें उस कलीसिया के भीतर मसीह के वर्तमान कार्य के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। हमें वही समयानुकूल वचन देना चाहिए जो पवित्र आत्मा कलीसिया से कह रहा है।

हमें इस बात से भी सावधान रहना चाहिए, कि पासवान कलीसिया के जीवन में जो कुछ बना रहा है, उसे हम न बिगाड़ दें। उदाहरण के लिए, एक पासवान अपनी कलीसिया को दशमांश देने और परमेश्वर के राज्य में आर्थिक रूप से देने के विषय में सिखा रहा हो सकता है। उसने कई सप्ताह इस विषय पर सिखाने और उन्हें इसका अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करने में लगाए होंगे। अब ज़रा कल्पना करें कि इसके तुरंत बाद एक अतिथि सेवक आता है और जोश से भरा हुआ यह संदेश प्रचार करता है, “परमेश्वर तुम्हें चाहता है, तुम्हारा धन नहीं।” खैर, अतिथि सेवक ने जो प्रचार किया, वह एक अर्थ में सही है। परन्तु परमेश्वर ने हमें यह भी सिखाया है कि हम अपने धन के द्वारा उसका आदर करें, क्योंकि हमारा धन भी हमारा प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, पासवान जो कुछ बना रहा है, उसके प्रति असंवेदनशील होकर, एक अतिथि सेवक एक ही सभा में उस बात को बिगाड़ सकता है जिसे पासवान कई महीनों से बना रहा था।

मुझे याद है, कई वर्ष पहले, मुझे बैंगलोर के एक स्थान पर आयोजित एक शिविर में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया था। उस शिविर का विषय कुछ इस प्रकार था—आत्माओं को जीतना। यह लगभग दो दिन के शिविर का अंतिम समय था। उस समय मैं एक 15 वर्ष का युवक था, जो खोई हुई आत्माओं के लिए उत्साह से भरा हुआ था। उस समय मैंने हाल ही में यिर्मयाह और विलापगीत की पुस्तकों को पढ़ा था, और नाश होने वाली आत्माओं के लिए परिश्रम करने और विलाप करने के लिए उत्साह से भर गया था। यिर्मयाह 9:1

उस समय मेरा प्रिय वचन था। मुझे शिविर के संयोजक द्वारा अंत में कुछ मिनट बोलने की अनुमति दी गई, इसलिए मैंने खोई हुई आत्माओं के लिए प्रार्थना में परिश्रम और विलाप करने की आवश्यकता और तात्कालिकता को व्यक्त किया। यह कितनी बड़ी भूल (गलती) थी!! जो मैंने कहा वह उस शिविर के विषय के बिल्कुल अनुरूप नहीं था। जबकि वे लोगों को बाहर जाकर खोई हुई आत्माओं तक पहुँचने के लिए प्रेरित कर रहे थे, मेरा संदेश यह था कि वे रुकें और प्रार्थना करें! यद्यपि जो मैंने प्रचार किया वह पवित्रशास्त्र के अनुसार था, परन्तु जो मैंने किया वह दैवीय व्यवस्था में नहीं था और अनावश्यक था। मुझे सभा के अगुवे से एक उचित डाँट मिली और मैंने यह पाठ कठिन तरीके से सीखा!

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** जब कहीं भी सेवकाई करने के लिए आमंत्रित किए जाएँ, तो उचित आत्मिक प्रक्रिया का पालन करें। परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन न करें और स्थापित अधिकार को अपने अधीन करने का प्रयास न करें।

## **नगरव्यापी कलीसिया में सेवकाई करते समय उचित आचरण**

अक्सर, पासवान और सेवक विशेष कार्यक्रमों, सम्मेलनों, सभाओं आदि के माध्यम से नगरव्यापी कलीसिया की सेवा करते हैं। कभी-कभी इससे प्रचार-प्रसार होता है और किसी प्रायोजक या सहभागी कलीसिया या सेवकाई के लिए परोक्ष रूप से प्रचार और बढ़ावा देने का प्रयास बन जाता है। बहुत ही सूक्ष्म रूप से, सेवक प्रतिभागियों को अपनी कलीसिया या सेवकाई में आने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करते हैं। यह एक अनुचित बात है और नगरव्यापी कलीसिया की सेवा करते समय अनुचित आचरण है।

यदि कोई कार्यक्रम आयोजित किया जाता है और नगरव्यापी

कलीसिया को आमंत्रित किया जाता है, तो उस कार्यक्रम को इस प्रकार संचालित किया जाना चाहिए कि विश्वासी उन्नत और प्रोत्साहित हों, और जो उन्होंने प्राप्त किया है उसे अपनी-अपनी कलीसियाओं में वापस ले जाकर अपनी गृह कलीसिया के लिए और भी अधिक उपयोगी बनें।

नगरव्यापी सेवकों और सेवकाइयों को विश्वासियों को उनकी स्थानीय कलीसिया के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें यह भी प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने दशमांश और भेंट अपनी स्थानीय कलीसिया में दें, जहाँ उन्हें पोषण और देखभाल मिलती है। यदि विश्वासी नगरव्यापी या वैश्विक सेवकों के साथ आर्थिक रूप से सहभागी होना चाहते हैं, तो वे अपनी स्थानीय कलीसिया को दशमांश देने के बाद भेंट के द्वारा ऐसा कर सकते हैं।

यदि कोई कार्यक्रम एक स्थानीय कलीसिया द्वारा अविश्वासियों तक पहुँचने और उन्हें अपनी देखरेख में लाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है, तो इसे सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाना चाहिए।

यदि हम शुद्ध उद्देश्य के साथ कार्यक्रमों, सम्मेलनों आदि का आयोजन करें—नगरव्यापी कलीसिया के निर्माण के लिए—तो हम कलीसियाओं के बीच अधिक सहभागिता और सहयोग देखना आरंभ करेंगे।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपनी सेवकाई इस प्रकार करें कि वह नगरव्यापी कलीसिया को उन्नति दे, उसे दृढ़ बनाए, और नगर में परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाए।

**जो आप सिखाते हैं उस पर ध्यान दें**

1 तीमुथियुस 4:16

अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि

यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।

## 2 तीमुथियुस 4:1-4

<sup>1</sup> परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुएों का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ

<sup>2</sup> कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।

<sup>3</sup> क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे,

<sup>4</sup> और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएँगे।

## याकूब 3:1

हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम क्या सिखाते और प्रचार करते हैं, क्योंकि हम बहुत से लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। जब हम लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाते हैं, तो स्पष्ट रूप से हम पर बहुत दबाव होता है।

- ऐसा दबाव कि हम नई-नई प्रकाशन, समझ, और विचार प्रस्तुत करें जो लोगों ने पहले न सुने हों।
- ऐसा दबाव कि हम विद्वत्तापूर्ण और गहरे विचार वाले प्रतीत हों, ताकि लोगों का सम्मान प्राप्त कर सकें।
- ऐसा दबाव कि हम मनोरंजन करें और लोगों को अच्छे लगें।
- ऐसा दबाव कि हमारे शब्द भविष्यद्वाणी जैसे प्रतीत हों, ताकि लोगों के लिए परमेश्वर से “सीधा वचन” जैसा प्रतीत हो।

यद्यपि हमें अपने श्रोताओं के जीवन में सिखाने, प्रशिक्षित करने, सुसज्जित करने, और बांटने का सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए, फिर भी हम लोगों की अपेक्षाओं और दबावों को हमें ऐसी बातें करने के लिए प्रेरित नहीं करने दे सकते जो दैवीय व्यवस्था के अनुसार नहीं हैं।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हम उसके वचन की सेवा विश्वास के साथ कर सकते हैं, यह जानते हुए कि उसका वचन फल उत्पन्न करेगा। उसका वचन लोगों के जीवन पर प्रभाव डालेगा। हमें "मनोरंजन" करने या हमेशा गहरे प्रकाशन या भविष्यद्वाणियाँ देने की आवश्यकता नहीं है। केवल सरल और व्यावहारिक तरीकों से शुद्ध वचन को सिखाना और प्रचार करना वास्तव में परमेश्वर के लोगों का निर्माण करेगा।

एक और क्षेत्र जिसमें हमें सावधान रहने की आवश्यकता है, वह है अपने अनुभवों और व्यक्तिगत प्रकाशनों को ऐसे सिखाना और प्रचार करना मानो वे परमेश्वर का वचन हों। हम सभी के जीवन में भिन्न-भिन्न अनुभव होते हैं, और सभी अनुभव परमेश्वर की सर्वोत्तम इच्छा या उसके सभी लोगों के लिए उसकी सामान्य योजना नहीं होते। अनुभवों को साझा करना केवल उसी सीमा तक अच्छा है, जहाँ तक वे लोगों को पवित्रशास्त्र के सत्य के प्रयोग को समझने में सहायता करते हैं। हम अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर कोई सिद्धांत नहीं बना सकते। इसी प्रकार, परमेश्वर के सेवक कभी-कभी ऐसे विशेष प्रकाशनों का दावा करते हैं जो पवित्रशास्त्र पर आधारित नहीं होते या वचन की सामान्य शिक्षा के अनुरूप भी नहीं होते। वे ऐसे उपदेशों से पहले इस प्रकार के कथन जोड़ते हैं, "पवित्र आत्मा ने मुझे प्रकट किया" या "मुझे प्रभु का एक विशेष दर्शन हुआ, और उसने मुझसे कहा।" यदि ये बातें लिखे हुए परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं हैं, तो हम उन्हें परमेश्वर के लोगों को प्रचार नहीं कर सकते।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** सत्य के वचन को ठीक रीति से विभाजित करें। खरे उपदेश का प्रचार और शिक्षा दें।

## वह जिसकी प्रभु प्रशंसा करते हैं

नीतिवचन 27:2

तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें, परन्तु तू आप न करना; दूसरा तुझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना।

यूहन्ना 5:41

मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।

यूहन्ना 5:44

तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

2 कुरिन्थियों 10:17,18

<sup>17</sup> परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करे।

<sup>18</sup> क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है वह नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।

अक्सर, जब हम सेवक अपनी गवाही या वे कार्य साझा करते हैं जो परमेश्वर ने किए हैं, तो बहुत ही सूक्ष्म रूप से हम परमेश्वर को महिमा देने के स्थान पर अपने आप को बढ़ावा देने लगते हैं। गवाही "मैं," "मुझे," और "मेरे" के विषय में हो जाती है, न कि उस प्रभु के विषय में जिसने हमारे द्वारा कार्य किया। हमें इन बातों के विषय में अपने आप को सावधान रखना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि हम वास्तव में परमेश्वर को महिमा दें। प्रभु हमें प्रशंसा दे, न कि हम स्वयं अपनी प्रशंसा करें।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** ऊपर से आने वाले आदर की खोज करें। अपने आप को बढ़ावा देने का प्रयास न करें।

## हमारी सेवकाई का प्रमाण

फिलिप्पियों 4:1

इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।

1 थिस्सलुनीकियों 2:19,20

<sup>19</sup> भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे?

<sup>20</sup> हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।

सेवकों के रूप में, हम अक्सर अपनी बुलाहट और सेवकाई के प्रमाण के रूप में कई महत्वहीन बातों पर निर्भर हो जाते हैं। हम सेवकाई के संबंधों, अन्य उपलब्धियों जैसे लिखी गई पुस्तकों, तैयार की गई रिकॉर्डिंग, जिन मंचों से हमने प्रचार किया है, या जिन बड़ी सभाओं में हमने सेवा की है—इन सबका उपयोग अपनी बुलाहट को प्रमाणित या सिद्ध करने के लिए करते हैं।

परन्तु हमारी सेवकाई का सच्चा प्रमाण बदले हुए जीवन हैं—ऐसे जीवन जो वास्तव में स्पर्श किए गए हैं और परमेश्वर के राज्य के लिए फल लाने के लिए स्थापित किए गए हैं। यदि जीवन परिवर्तित नहीं होते, समृद्ध नहीं होते, और परमेश्वर के राज्य में स्थापित नहीं होते, तो अन्य बातें ज्यादा महत्व नहीं रखतीं।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** सेवकाई में लोगों को उन्नति देना ही मुख्य लक्ष्य रखें। लोगों के जीवन में जो किया जाता है, वही वास्तव में महत्वपूर्ण है।

## किसी को ठोकर न देना

1 कुरिन्थियों 10:32,33

<sup>32</sup> तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो।

<sup>33</sup> जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ कि वे उद्धार पाएँ।

## 2 कुरिन्थियों 6:3,4

<sup>3</sup> हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

<sup>4</sup> परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से,

सेवकों के रूप में, हमें ऐसी अवस्था में पहुँचना चाहिए जहाँ हम अपनी बुलाहट और ज़िम्मेदारी को “भय और काँपते हुए” धारण करें। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से लोग ऐसा नहीं कर रहे हैं। सम्भवतः हम बातों को बहुत हल्के में ले रहे हैं। हम उतने सावधान नहीं हैं जितना हमें होना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित कर सकें कि हम इस प्रकार से व्यवहार करें कि हमारी सेवकाई निर्दोष बनी रहे।

कलीसिया के भीतर के लोग और बाहर के लोग, दोनों ही हमें मसीह के सेवकों के रूप में देख रहे हैं। हमें वास्तव में मसीह का प्रतिनिधित्व करना है। हमारा जीवन ऐसा होना चाहिए कि हम प्रेरित पौलुस के समान कह सकें, “तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।” (1 कुरिन्थियों 11:1)

- यदि हम परमेश्वर के सेवक होकर अपने सह-सेवकों के साथ प्रेम में चलने में असमर्थ हैं, तो हम परमेश्वर के लोगों को प्रेम में चलना कैसे सिखा सकते हैं?
- यदि हम परमेश्वर के सेवक होकर परमेश्वर के सामने नम्रता में नहीं चल सकते, तो हम परमेश्वर के लोगों को यह कैसे सिखा सकते हैं?
- यदि हम परमेश्वर के सेवक होकर अपने आप को पवित्रता, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी में नहीं रखते, तो हम परमेश्वर के लोगों

को इन बातों में चलना कैसे सिखा सकते हैं?

- यदि हम परमेश्वर के सेवक होकर धन को ठीक प्रकार या बुद्धिमानी से नहीं संभालते, तो हम परमेश्वर के लोगों को यह कैसे सिखा सकते हैं?
- यदि हम परमेश्वर के सेवक होकर अपने जीवनसाथी और अपने बच्चों से प्रेम नहीं कर सकते और एक धर्मी घर स्थापित नहीं कर सकते, तो हम परमेश्वर के लोगों को यह कैसे सिखा सकते हैं?

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपनी सेवकाई की बुलाहट को अत्यंत आदर के साथ धारण करें। अपने आप को इस प्रकार चलाएँ कि मसीह के नाम पर कोई कलंक न आए।

## सब कलीसियाओं में प्रशंसा

नीतिवचन 22:1

बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है

2 कुरिन्थियों 8:18

हम ने उसके साथ उस भाई को भी भेजा है जिसका नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में फैला हुआ है;

2 कुरिन्थियों 8:23

यदि कोई तीतुस के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी है; और यदि हमारे भाइयों के विषय में पूछे, तो वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह की महिमा हैं।

फिलिप्पियों 2:29

इसलिये तुम प्रभु में उससे बहुत आनन्द के साथ भेंट करना, और ऐसों का आदर किया करना,

हम, पासवान, सेवक और अन्य सेवकाई के अगुवे, इस प्रकार से

जीवन व्यतीत करें कि जहाँ-जहाँ हमें सेवा करने का अवसर मिला है, वहाँ की सभी कलीसियाओं में हमारा अच्छा नाम हो। हमें उन सब के बीच आदर के योग्य ठहराया जाना चाहिए।

बहुत बार हम इस बात पर गर्व करते हैं कि हमने किसी विशेष कलीसिया में, किसी विशेष सम्मेलन में, या किसी विशेष मंच से प्रचार किया। हमारी सेवकाई की वास्तविक परीक्षा इस बात में नहीं है कि हमने किस कलीसिया में प्रचार किया या किस सम्मेलन में हमें बोलने के लिये बुलाया गया, बल्कि इस बात में है कि हमने किस प्रकार सेवा की और अपने आप को कैसे प्रस्तुत किया, ताकि हमारे प्रभु के नाम को महिमा और आदर मिले।

क्या जिन लोगों ने हमें बुलाया, वे हमें फिर से बुलाने में प्रसन्न होंगे, या क्या हमने ऐसा अनुचित व्यवहार किया कि वे हमारे जाने पर प्रसन्न हुए? यदि हम किसी कलीसिया में गए और वहाँ अनुचित व्यवहार किया, तो निश्चय ही हमने न केवल अपनी सेवकाई का, बल्कि परमेश्वर के राज्य का भी अपमान किया है।

यदि प्रेरित पौलुस आज हमारी व्यक्तिगत सेवकाइयों को देखते, तो क्या वह हमारे विषय में भी वैसे ही लिख पाते जैसा उन्होंने तीतुस और उसके सहकर्मियों के विषय में लिखा—उन्हें *“मसीह की महिमा”* कहकर? *“मैसेज बाइबल”* इस वाक्यांश का उपयोग करती है, *“मसीह के लिये सच्चा सम्मान।”*

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपने नगर (या क्षेत्र) की कलीसियाओं के बीच इस प्रकार आचरण करें कि आपकी प्रशंसा हो और आप वास्तव में *मसीह के लिये सम्मान* का कारण बनें!





**विश्वासियों के रूप में  
उचित आचरण**

---



### 3

## विश्वासियों के रूप में उचित आचरण

विश्वासियों के रूप में, हमसे यह भी अपेक्षा की जाती है कि हम दैवीय व्यवस्था को समझें और उसमें चलें। हमें यह सीखना चाहिए कि अपने स्थानीय कलीसिया के भीतर और अपने क्षेत्र की स्थानीय कलीसियाओं के बीच, अर्थात् नगर-व्यापी कलीसिया में, हमें किस प्रकार अपना आचरण करना है।

यदि विश्वासी अपने आप को उचित रीति से चलाते हैं, तो इससे बहुत से झगड़े और विभाजन कम होंगे, और नगर की स्थानीय कलीसियाओं के बीच एकता बढ़ेगी। इससे नगर-व्यापी कलीसिया सुदृढ़ होगी और वह नगर पर एक प्रभावशाली प्रभाव डाल सकेगी।

### चरवाहे और भेड़ों के बीच आत्मिक संबंध

प्रेरितों के काम 20:28

इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

इब्रानियों 13:17

अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

जैसा कि “चरवाहे और भेड़ों के बीच आत्मिक संबंध” खंड में कहा गया है, पवित्र आत्मा ही चरवाहे को झुंड के बीच में रखता है ताकि वह उनकी देखभाल करे। स्थानीय कलीसिया का पासवान उस

कलीसिया के लिये मसीह जो चरवाहे हैं, उनका प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए विश्वासियों को अपने चरवाहे के प्रति उत्तरदायी होना सीखना चाहिए।

### यूहन्ना 10:1-3

<sup>1</sup> “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।

<sup>2</sup> परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है।

<sup>3</sup> उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।

यूहन्ना 10:1-3 में, यीशु अपने लोगों के साथ अपने संबंध को दर्शाते हैं। चरवाहे और भेड़ों के संबंध में एक सरल शिक्षा जो हम सीख सकते हैं वह यह है कि चरवाहा अगुवाई करता है और भेड़ों के आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं।

विश्वासियों के रूप में, हमें अपने स्थानीय चरवाहे के प्रति प्रतिबद्ध रहना सीखना चाहिए। स्थानीय चरवाहा स्थानीय कलीसिया को उसकी आत्मिक यात्रा में अगुवाई करने और उसे परमेश्वर द्वारा दी गई उसकी नियति को पूरा करने में आगे बढ़ाने के लिये उत्तरदायी होता है। स्थानीय कलीसिया का भाग होने के नाते, अब आप उस आत्मिक यात्रा का एक हिस्सा हैं। आपको अपनी स्थानीय कलीसिया के दर्शन और बुलाहट के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए। आपको उस बुलाहट और दर्शन को पूरा करने में सहायता देने के लिये अपने आप को अर्पित करना चाहिए।

स्थानीय कलीसिया का भाग होना, विश्वासियों के सामूहिक शरीर का भाग होना है, जहाँ आपकी एक महत्वपूर्ण भूमिका और कार्य है। हर एक विश्वासी की एक जिम्मेदारी होती है जो केवल कलीसिया में उपस्थित होने से कहीं अधिक है। आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप

स्थानीय कलीसिया के जीवन में योगदान दें और उस कलीसिया के जीवन से ग्रहण भी करें। एक विश्वासी के रूप में, आप उस शरीर के सदस्य हैं और आपको उस स्थानीय कलीसिया के जीवन में भाग लेना चाहिए। केवल ग्रहण करने के उपाय खोजने वाले उपभोक्ता मात्र न बनें। इसके बजाय, सेवा करें, दें, और अपनी स्थानीय कलीसिया को मजबूत बनाएं।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** स्थानीय कलीसिया का भाग होना, अपने पासवान, अन्य सदस्यों, और उस स्थानीय शरीर के सामूहिक दर्शन के प्रति समर्पित होना है। केवल कलीसिया में उपस्थित न हों। स्थानीय कलीसिया का एक समर्पित हिस्सा बनें।

## चरवाहे की लाठी और सोंटा

अधिकांश विश्वासी “हरी चराइयों” और “शांत जल” को पसंद करते हैं जहाँ स्थानीय चरवाहा (पासवान) उन्हें ले जाता है। परन्तु बहुत कम लोग यह समझते हैं कि उनके पासवान के पास एक लाठी और एक सोंटा होता है। लाठी और सोंटा भेड़ों का मार्गदर्शन करने और उनकी रक्षा करने के लिए होते हैं।

चरवाहा अपनी लाठी और सोंटे का उपयोग उन भेड़ों को सही मार्ग पर लाने के लिए करता है जो भटकने लगती हैं, ताकि वे फिर से भेड़शाला में लौट आएँ। कभी-कभी उसे भेड़ों को हल्के से थपथपाना पड़ता है ताकि वे सीधी राह पर आ जाएँ। इससे थोड़ा दर्द हो सकता है, परन्तु यह अच्छे इरादे से और भेड़ों के लाभ के लिए किया जाता है।

विश्वासियों के रूप में, हमें अपने पासवान से मिलने वाली सुधार, ताड़ना और मार्गदर्शन को स्वीकार करना सीखना चाहिए। केवल इसलिए क्रोधित होकर किसी दूसरे स्थानीय कलीसिया की खोज में न निकल जाएँ क्योंकि आपको सुधार मिला है। सुधार को स्वीकार करें,

स्वयं को सही करें, और आगे बढ़ते रहें।

अपनी लाठी और सोंटे के द्वारा, चरवाहा भेड़ों को उग्र भेड़ियों, भालुओं और घूमते हुए सिंहों से बचाता है जो भेड़ों को निगल जाना चाहते हैं। बहुत कम विश्वासी वास्तव में उन अनेक लड़ाइयों की सराहना करते हैं, जो उनके पासवान उन्हें सुरक्षित रखने के लिए लड़ते हैं। पासवान भेड़ों को फूट और झगड़े की आत्माओं से बचाने के लिए लड़ते हैं। वे अपने लोगों को भूल और धोखे की आत्माओं से बचाने के लिए संघर्ष करते हैं। वे उन दुष्टात्माओं से रक्षा करते हैं जो परमेश्वर की आशीषों को चुराने, मारने और नष्ट करने की कोशिश करती हैं। पासवान अपनी भेड़ों पर यह आत्मिक निगरानी रखते हैं।

अपने पासवान की सराहना करना सीखें, उन बातों के लिए जो वो आपके लिए कर रहे हैं। आप शायद उनके युद्ध से घायल हाथों को न देखें, या उन अनेक अकेले में बिताए हुए घंटों को न जानें जो वह दुष्ट शक्तियों से लड़ते हुए बिताते हैं, ताकि आपकी रक्षा कर सकें। फिर भी, वह आपके लिए यह करते हैं। उनकी सराहना करें। अपने पासवान के प्रति प्रतिबद्ध रहें।

**अभ्यास के लिए सिद्धांत:** अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा आपके पासवान या आत्मिक अगुवों के माध्यम से लाई जाने वाली सुधार को ग्रहण करने के लिए तैयार रहें।

## चरवाहे को नेतृत्व करने वाली भेड़ें

परमेश्वर की दैवीय व्यवस्था यह है कि चरवाहा अपनी भेड़ों का नेतृत्व करे। जब भी भेड़ें अपने चरवाहे का नेतृत्व करने का प्रयास करती हैं, तब चीजें दैवीय व्यवस्था में नहीं रहतीं। विकास और प्रगति रुक जाती है। भ्रम और कलह बढ़ जाती है।

कुछ विश्वासी चालाक होते हैं। ऐसे विश्वासी जिनकी भेंट कलीसिया

की आय का बड़ा भाग होती है, वे पासवान पर अपनी शर्तें थोपने लगते हैं। कुछ अन्य विश्वासी अपने सामाजिक स्तर, संबंधों, प्रभाव आदि का उपयोग करके पासवान को निर्देश देते हैं कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। और फिर ऐसे भी विश्वासी होते हैं जो अपने पासवान को नियंत्रित करने के लिए चापलूसी का उपयोग करते हैं।

विश्वासियों को यह समझना चाहिए कि जैसे ही स्थानीय कलीसिया में चरवाहे और भेड़ों की भूमिका बदलती है, उसके गंभीर परिणाम होते हैं।

आपके पास चाहे कोई भी लाभ हो—धन, आयु, प्रभाव, पद, अनुभव आदि—एक विश्वासी के रूप में आपको कलीसिया में परमेश्वर द्वारा नियुक्त व्यवस्था के अनुसार ही चलना चाहिए। हाँ, आप अपने विचार, सुझाव और सोच अपने पासवान के साथ साझा करने के लिए स्वतंत्र हैं। वास्तव में, यह आवश्यक भी है। परन्तु आपको अपने पासवान को नियंत्रित करने या उनका नेतृत्व करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

**अभ्यास के लिए सिद्धांत:** कभी भी दैवीय व्यवस्था का उल्लंघन न करें और अपने पासवान का मार्गदर्शन करने का प्रयास न करें। अपने विचार और सुझाव साझा करें, परन्तु कभी भी अपने पासवान को अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए प्रभावित या बाध्य न करें।

### **“मैं आपसे सहमत नहीं हूँ, पासवान”**

विश्वासियों के रूप में, हम विभिन्न स्रोतों के माध्यम से अपने आत्मिक समझ में सीख और वृद्धि कर सकते हैं। मसीही पुस्तकें, शिक्षा / प्रचार की रिकॉर्डिंग, मसीही टेलीविजन आदि आत्मिक ज्ञान साझा करने के माध्यम हैं। ये ऐसे साधन हैं जो अधिकांश शहरों में रहने वाले विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं।

जैसे-जैसे विश्वासी आत्मिक रूप से बढ़ते और विकसित होते हैं, ऐसे समय आ सकते हैं जब वे कुछ आत्मिक सच्चाइयों की समझ में अपने पासवान से पूरी तरह सहमत न हों। जब तक यह समझ का अंतर मसीही विश्वास के मूल सिद्धांतों से संबंधित नहीं है, तब तक विश्वासी अपने पासवान के साथ सहयोग कर सकता है और उस स्थानीय कलीसिया में कार्य कर सकता है।

आत्मिक समझ में छोटे-छोटे अंतर किसी विश्वासी के लिए स्थानीय कलीसिया छोड़ने का कारण नहीं होने चाहिए। विश्वासियों के रूप में, हमें इतना परिपक्व होना चाहिए कि हम एक-दूसरे के मतभेदों का सम्मान कर सकें। हमें छोटी बातों पर समय व्यर्थ करना छोड़ देना चाहिए और इसके बजाय मुख्य कार्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए—मसीह की महिमा करना और सब जातियों में चले बनाना।

एक स्थानीय कलीसिया में, पासवान को उस विषय की अपनी आत्मिक समझ के अनुसार शिक्षा देने और प्रचार करने का पूरा अधिकार होता है। यदि कोई विश्वासी किसी विशेष विषय पर थोड़ी भिन्न समझ रखते हुए अपने विचारों को फैलाता फिरता है और पासवान को छोटा दिखाता है, तो वह विश्वासी अनुचित व्यवहार कर रहा है। वह फूट डाल रहा है और दैवीय व्यवस्था के अनुसार नहीं चल रहा है।

**अभ्यास के लिए सिद्धांत:** भले ही आप कुछ बातों में अपने पासवान से असहमत हों, फिर भी उनसे प्रेम करें और उन्हें अपने आत्मिक अधिकारी के रूप में मानें। फूट डालने का कार्य न करें।

**“परमेश्वर ने मुझसे कहा ...”**

विश्वासियों के बीच यह एक प्रवृत्ति बनती जा रही है कि वे अपनी लगभग हर बात की शुरुआत “परमेश्वर ने मुझसे कहा” से करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो इन विश्वासियों के पास अपने स्वयं के कोई

विचार या सोच नहीं होते, और वे लगातार परमेश्वर की आवाज़ सुनते रहते हैं। स्पष्ट है, कि यह सत्य नहीं है।

परमेश्वर ने हमें उपयोग करने के लिए मन दिया है, और मन का उपयोग करने में कुछ भी गलत नहीं है, विशेषकर तब जब वह मन परमेश्वर के वचन के द्वारा नवीनीकृत हुआ हो। साथ ही, हमें यह सीखना होगा कि पवित्र आत्मा की साक्षी, हमारे अपने मानवीय आत्मा की आवाज़, और हमारी प्राकृतिक इच्छाओं या झुकावों के बीच अंतर कैसे करें। यदि हमने यह करना नहीं सीखा, तो हम कैसे निश्चित रूप से जान पाएँगे कि जो हम सोचते हैं वह परमेश्वर की आत्मा बोल रही है और न कि हमारा अपना मन या भावनाएँ कार्य कर रही हैं!

अक्सर, विश्वासी "परमेश्वर ने मुझसे कहा" कहकर अपनी बात की शुरुआत इस उद्देश्य से करते हैं, कि वे अप्रत्यक्ष रूप से अपने सुनने वाले को यह कह सकें, "जो मैं कह रहा हूँ उस पर प्रश्न मत करो।" उन्हें डर होता है कि वो जो कह रहे हैं, उसके विषय में लोग उनसे प्रश्न कर सकते हैं या उनसे स्पष्टीकरण माँग सकते हैं। इसलिए वे सोचते हैं कि यदि वे अपनी बात की शुरुआत "परमेश्वर ने मुझसे कहा" से करेंगे, तो कोई भी उनसे प्रश्न नहीं करेगा। परन्तु लोगों को यह स्वतंत्रता दी जानी चाहिए कि वे जो सुनते हैं उसकी परख और उसका मूल्यांकन कर सकें।

कुछ, जो स्वयं को अधिक आत्मिक मानते हैं, "परमेश्वर ने मुझसे कहा" वाक्य का उपयोग पासवान को नियंत्रित करने, मार्गदर्शन देने और निर्देश देने के लिए करते हैं। वे विशेष दर्शन, स्वप्न या व्यक्तिगत प्रकाशन का दावा कर सकते हैं और उसे पासवान को बताते हैं ताकि पासवान वही करे जो वे परमेश्वर की इच्छा समझते हैं। अब, ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर वास्तव में किसी सदस्य से बात करे और कलीसिया के लिए एक वचन दे। परन्तु उस वचन को स्थानीय चरवाहे

के पास प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि वह यह निर्णय ले सके कि उसके साथ क्या करना है। यदि पासवान और आत्मिक प्राचीन यह समझते हैं कि वह वचन या स्वप्न केवल कल्पना थी, तो वे उसे अलग रखने का निर्णय ले सकते हैं।

विश्वासियों के रूप में, हमें "परमेश्वर ने मुझसे कहा" वाक्य का उपयोग करने से पहले बहुत सावधान रहना चाहिए। इसका उपयोग केवल तभी ही करें, जब आपको पूर्ण निश्चितता हो कि पवित्र आत्मा ने आपसे बात की है। अन्यथा, बस कहें, "मैं अपने आत्मा में अनुभव करता हूँ ..." या "मैं अपने आत्मा में प्रबलता से महसूस करता हूँ ..." या "मैं सोचता हूँ ..." या "मेरे पास एक विचार है ..." "मैंने सोचा" या "मेरे पास एक विचार था" कहने में कोई हानि नहीं है। आखिरकार, परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने नवीनीकृत मन का उपयोग करें!

**अभ्यास के लिए सिद्धांत:** "परमेश्वर ने मुझसे कहा" वाक्य का उपयोग उसके योग्य आदर के साथ करें। हर छोटी बात के लिए परमेश्वर से सीधे प्रकाशन का दावा करते हुए अति-आत्मिक बनने का प्रयास न करें!

## अपना दशमांश वहीं देना जहाँ वह वास्तव में देना चाहिए

### 1 कुरिन्थियों 9:11

अतः जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएँ बोई, तो क्या यह कोई बड़ी बात है कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें।

### गलातियों 6:6

जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे।

यह राज्य का एक सिद्धांत है कि जिन्हें आत्मिक बातों में सेवा दी जाती है, उन्हें भौतिक बातों में उन लोगों को देना चाहिए जो आत्मिक

सेवा करते हैं। यह, निस्संदेह, स्थानीय कलीसिया पर लागू होता है, अर्थात् परमेश्वर का आत्मिक घर। दशमांश यहोवा के भवन का है (मलाकी 3:10) और इसे उसी स्थानीय कलीसिया में देना चाहिए जहाँ आप वर्तमान में जुड़े हुए हैं। कुछ विश्वासी जो किसी स्थानीय कलीसिया का भाग हैं, जहाँ वे सेवा करते हैं और आत्मिक पोषण प्राप्त करते हैं, अपने दशमांश को किसी अन्य स्थान—किसी अन्य कलीसिया, सेवकाई या सामाजिक कार्य—में भेज देते हैं। यह सही बात नहीं है। आपका दशमांश उसी स्थानीय कलीसिया में जाना चाहिए जहाँ आप वर्तमान में जुड़े हुए हैं, जहाँ आपकी आत्मिक सेवा हो रही है और आपकी देखभाल की जा रही है। निस्संदेह, आप अन्य सेवकों और मिशन संगठनों को भेंट भेजने के लिए स्वतंत्र हैं जिनके साथ आप सहभागी होना चाहते हैं। परन्तु यह याद रखें कि आपकी स्थानीय कलीसिया ही यहोवा का घर है जिसका आप भाग हैं, और जो हर समय आपकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए है।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** अपना दशमांश वहीं दें जहाँ वह वास्तव में दिया जाना चाहिए।

## प्रवेश करना और बाहर निकलना सीखना

विश्वासियों के रूप में, हमें यह सीखना चाहिए कि यदि परिस्थिति उत्पन्न हो, तो किसी स्थानीय कलीसिया को छोड़कर दूसरी स्थानीय कलीसिया का भाग किस प्रकार बनें, वह भी शिष्टता और उचित व्यवस्था के साथ। ऐसे कई कारण हो सकते हैं जिनके कारण आप एक विश्वासी के रूप में किसी स्थानीय कलीसिया को छोड़ने का निर्णय लेते हैं। हो सकता है कि आप एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे हों। हो सकता है कि आपको उतना आत्मिक पोषण नहीं मिल रहा हो जितनी आपको आवश्यकता है। हो सकता है कि आपकी व्यक्तिगत बुलाहट और वरदान आपकी वर्तमान कलीसिया की बुलाहट और वरदान के साथ मेल नहीं खाते हों, आदि।

यह महत्वपूर्ण है कि जब आप एक स्थानीय कलीसिया को छोड़कर दूसरी कलीसिया में जाते हैं, तो उस कलीसिया को सूचित करें जिसे आप छोड़ रहे हैं। केवल "उठकर चले जाना" और गायब हो जाना उचित नहीं है। आखिरकार, पासवान, आत्मिक अगुवे, और उस स्थानीय कलीसिया के सदस्य किसी न किसी प्रकार से आपके जीवन में जुड़े रहे हैं। आप उस कलीसिया के सामूहिक जीवन का भाग रहे हैं, वहाँ से दिया और पाया है। जब आप छोड़ते हैं, तो वहाँ बिताए गए समय के दौरान जो कुछ आपको दिया गया है, उसके लिये आभार और सराहना के साथ छोड़ें। जब आप छोड़ते हैं, तो यह जानते हुए छोड़ें कि आप और वह कलीसिया जिसे आप छोड़ रहे हैं, दोनों अभी भी एक ही शरीर, अर्थात् मसीह की देह का भाग हैं। एक अच्छी गवाही और उस स्थानीय शरीर के सभी सदस्यों के साथ अच्छे संबंधों के साथ जाएँ।

जब आप किसी दूसरी स्थानीय कलीसिया का भाग बनने का निर्णय लेते हैं, तो नम्रता और पूरे मन से प्रतिबद्धता के साथ ऐसा करें। चाहे आपके पिछले आत्मिक अनुभव कैसे भी रहे हों, आपको आपकी नई कलीसिया परिवार के बारे में बहुत कुछ सीखना बाकी है। अपने आप को अपनी नई स्थानीय कलीसिया के दर्शन, दिशा, और बुलाहट के साथ जोड़ें। जो भी सेवा आपको दी जाए, उसमें स्थानीय कलीसिया में सेवा करें। पद और प्रतिष्ठा की खोज न करें। आपके नए पासवान को भी आपको परखना, जाँचना, और यह देखना होता है कि आप वास्तव में किस प्रकार के हैं, इससे पहले कि वह आपको किसी सेवा के क्षेत्र में नियुक्त करें।

कई बार ऐसा होता है कि विश्वासी किसी स्थानीय कलीसिया को सुखद कारणों से नहीं, बल्कि असहमति के कारण छोड़ने का निर्णय लेते हैं, जैसे कि किसी अन्य विश्वासी के साथ मतभेद, या पासवान या आत्मिक अगुवों के साथ असहमति। ऐसी अप्रिय परिस्थितियों में भी, यह महत्वपूर्ण है कि आप जाने से पहले अपनी स्थानीय कलीसिया

के साथ बातों को सुलझा लें। अन्यथा, आप जहाँ भी जाएंगे, अपने साथ “बोझ” लेकर चलेंगे—जैसे कि क्षमा न करने का भाव, आपसी समस्याएँ आदि। बहुत संभव है कि वही बातें फिर से होंगी, और यह चक्र जहाँ भी आप जाएँगे, दोहराता रहेगा।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** यदि आपको एक स्थानीय कलीसिया को छोड़कर दूसरी कलीसिया में जाना ही है, तो इस प्रकार छोड़ें और प्रवेश करें जो प्रभु को भाता हो।

## भोले न बनें

प्रेरितों के काम 20:30

तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।

इफिसियों 4:13,14

<sup>13</sup> जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।

<sup>14</sup> ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों।

2 पतरस 2:1-3

<sup>1</sup> जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे, उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे, और उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे, और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

<sup>2</sup> बहुत से उन के समान लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी।

<sup>3</sup> वे लोभ के लिये बातें गढ़कर तुम्हें अपने लाभ का कारण बनाएँगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहले से हो चुकी है उसके आने में कुछ भी देर नहीं, और उन का विनाश ऊँघता नहीं।

विश्वासियों को नई शिक्षाओं या सिद्धांतों की हवाओं के प्रति सावधान रहना सीखना चाहिए, जो उन्हें विश्वास से दूर ले जाने का प्रयास करती हैं। यदि कोई नई शिक्षा, नया सिद्धांत आदि आता है, तो उसकी सत्यता के बारे में अपने पासवान या आत्मिक अगुवों से जांच करें। किसी शिक्षा की सत्यता का निर्णय इस आधार पर न करें कि उस शिक्षक के कितने अनुयायी हैं या वह कितना प्रसिद्ध है। हर शिक्षा को परमेश्वर के लिखित वचन के प्रकाश में परखें।

- यदि कोई शिक्षा हमारे प्रभु यीशु मसीह के बाइबिल के अनुसार समझ—कि वह कौन हैं और उन्होंने क्या किया है—का इन्कार करती है, तो उसे त्याग दें।
- यदि कोई शिक्षा आपके जीवन में मसीह की प्रभुता को हटाती है, तो उसे त्याग दें।
- यदि कोई शिक्षा प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का विरोध करती है और पवित्रशास्त्र की सामान्य शिक्षा के साथ मेल नहीं खाती, तो उसे त्याग दें।

दूसरी ओर, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आपके स्थानीय कलीसिया में आपको जो सत्य सिखाया जा रहा है, उसके विषय में संदेह और अविश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में भी, अपने पासवान और आत्मिक अगुवों के साथ बात करें। प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को यह चेतावनी दी, *“हे तीमुथियुस, इस धरोहर की रखवाली कर; और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से भटक गए हैं। तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।”* (1 तीमुथियुस 6:20,21)

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो आत्मिक या विद्वान होने का दिखावा करके उन बातों पर प्रश्न उठाते हैं और उनका इन्कार करते हैं जिन्हें

पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है। इनमें से कुछ तो “विश्वास के रक्षक” भी प्रतीत होते हैं, परन्तु वे संदेह और अविश्वास में चलते हैं, और इस प्रकार वचन के मूल तत्व और परमेश्वर के स्वभाव को ही त्याग देते हैं।

वचन का अध्ययन करें। पवित्रशास्त्र को खोजें। जो कुछ आप विश्वास करते हैं उसका आधार लिखित वचन ही होने दें।

विश्वासियों के रूप में, हमें यह जानना चाहिए कि हमारे जीवन पर बोले गए भविष्यवाणी के वचन, लिखित पवित्रशास्त्र का स्थान नहीं ले सकते। हर एक भविष्यवाणी के वचन को लिखित पवित्रशास्त्र के प्रकाश में परखा जाना चाहिए। परमेश्वर का लिखित वचन ही हमारे जीवन में अंतिम अधिकार है।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** स्वयं वचन का अध्ययन करें और हर एक शिक्षा को जो आपको दी जाती है, लिखित वचन के द्वारा जांचें।

## फूट न डालें

नीतिवचन में कहा गया है कि परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है जो भाइयों के बीच झगड़ा उत्पन्न करते हैं।

### नीतिवचन 6:16-19

<sup>16</sup>छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है,

वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है:

<sup>17</sup>अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें,

झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ,

<sup>18</sup>अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन,

बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पाँव,

<sup>19</sup>झूठ बोलनेवाला साक्षी

और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

विश्वासियों के रूप में, हमें अपने आचरण और अपनी बातों के विषय में सावधान रहना चाहिए, ताकि हम परमेश्वर के लोगों के बीच फूट पड़ने का कोई अवसर न दें।

यदि किसी भी प्रकार से हम ऐसी बातें कहते या करते हैं जिनसे झगड़ा उत्पन्न होता है, तो हमें मेल कराने वाले बनकर पुनर्स्थापना और चंगाई लानी चाहिए।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** यह निश्चय करें कि आप मसीह की देह में झगड़ा उत्पन्न करने वाले नहीं, बल्कि मेल कराने वाले बनेंगे।

## नगर-व्यापी और अन्य सेवकाइयों के द्वारा ग्रहण करना

इफिसियों 4:11,12

<sup>11</sup>उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया,

<sup>12</sup>जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए,

हमें यह समझना चाहिए कि जिन सेवकों और सेवकाइयों को परमेश्वर ने खड़ा किया है, उनका प्रभाव पूरे नगर में या उससे भी आगे तक होता है। और कुछ सेवक और सेवकाइयाँ ऐसी भी होती हैं जिनकी सेवा पूरी दुनिया तक फैलती है। विश्वासियों के रूप में, हमें ऐसे सेवकों और सेवकाइयों से ग्रहण करना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने उठाया है और जो शुद्ध मन से उसकी सेवा कर रहे हैं। जो अच्छी बातें आप सीखते हैं, उन्हें लेकर अपनी स्थानीय कलीसिया के जीवन को समृद्ध करें। नगर-व्यापी और वैश्विक सेवकाइयों के द्वारा जो कुछ आप ग्रहण करते हैं, उससे आपकी स्थानीय कलीसिया और भी अधिक सुदृढ़ और समृद्ध हो। आप ऐसी सेवकाइयों को भेंट भी दे सकते हैं और उनके साथ सहभागिता भी कर सकते हैं।

परन्तु यदि आप पाते हैं कि अन्य नगर-व्यापी सेवक या वैश्विक सेवक आपको नियंत्रित और प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं कि आप अपनी स्थानीय कलीसिया को छोड़ दें, उनके पीछे चलें, या अनुचित मात्रा में धन दें, तो आपको सावधानी बरतनी चाहिए।

**अभ्यास के लिये सिद्धांत:** नगर-व्यापी और वैश्विक सेवकाइयों के द्वारा ग्रहण करना सीखें और जो कुछ आप सीखते हैं उसका उपयोग अपनी स्थानीय कलीसिया को सुदृढ़ करने के लिये करें।

## आत्मिक अधिकार का आदर करें

1 थिस्सलुनीकियों 5:12,13

<sup>12</sup> हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो।

<sup>13</sup> और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।

1 तीमुथियुस 5:17,18

<sup>17</sup> जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।

<sup>18</sup> क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, “दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना,” क्योंकि “मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है।”

इब्रानियों 13:7

जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चालचलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।

दैवीय व्यवस्था में चलने का एक भाग यह है कि हम अपने बीच स्थापित आत्मिक अधिकार का सम्मान और आदर करना सीखें।

आत्मिक अधिकार का उल्लंघन करने से भ्रम और कलह के लिए द्वार खुल जाता है, जो शत्रु को प्रवेश करने का अवसर देता है।

स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में, पासवान / चरवाहे के अतिरिक्त, आत्मिक प्राचीन और अन्य लोग भी होते हैं जिन्हें पासवान ने अधिकार, जिम्मेदारी और अगुवाई सौंपी होती है। यह असामान्य नहीं है कि स्थानीय सभा के कुछ सदस्य ऐसे आत्मिक प्राचीनों और अगुवों के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, और फिर भी पासवान के प्रति बहुत आज्ञाकारी दिखाई देते हैं। यह परमेश्वर के घर में उचित आचरण नहीं है। पासवान के अधीन रहने का अर्थ यह भी है कि हम उन प्राचीनों और अगुवों के अधीन रहें जिन्हें उसने परमेश्वर के घर में परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए नियुक्त किया है।

दूसरी ओर, जिन्हें पासवान से अधिकार और अगुवाई सौंपी गई है, उन्हें अपने आप को उस भरोसे के योग्य आचरण में रखना चाहिए जो उन पर किया गया है। इन आत्मिक प्राचीनों और अगुवों को उसी आत्मा को बनाए रखना चाहिए और उसी रीति से चलना चाहिए जिस प्रकार उनका पासवान चलता है। उन्हें सौंपे गए अधिकार का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए ताकि वे स्थानीय कलीसिया में लोगों को नियंत्रित और प्रभावित कर सकें।

आत्मिक अधिकार के प्रति सम्मान केवल बाहरी रूप या दिखावे तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह सामान्य बात है कि लोग आत्मिक अधिकार के प्रति बाहरी सम्मान दिखाते हैं। वे सही शब्दों का उपयोग कर सकते हैं आदि। परन्तु थोड़ी ही देर में, यदि कुछ गलत हो जाए, तो सारा सम्मान समाप्त हो जाता है और हृदय की वास्तविक स्थिति प्रकट हो जाती है। यह स्पष्ट संकेत है कि इस स्थिति में आत्मिक अधिकार के प्रति सम्मान सच्चा नहीं था, बल्कि केवल एक बाहरी दिखावा था। विश्वासियों के रूप में, हमें इससे आगे बढ़ना है!

**अभ्यास के लिए सिद्धांत:** उस आत्मिक अधिकार के प्रति सच्चा आदर रखें जिसे परमेश्वर ने आपके जीवन में स्थापित किया है।



जहाँ व्यवस्था होती है,  
वहाँ वृद्धि होती है

---



## 4

# जहाँ व्यवस्था होती है, वहाँ वृद्धि होती है

## दैवीय व्यवस्था वृद्धि लाती है

प्रेरितों के काम 6:7

परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया।

प्रेरितों के काम 15:4

जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे।

प्रेरितों के काम 16:5

इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गईं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।

प्रारंभिक कलीसिया के जीवन में कम से कम दो अवसरों पर (प्रेरितों के काम अध्याय 6 और 15), हम देखते हैं कि जब समस्याओं का समाधान किया गया और बातों को व्यवस्था में रखा गया, तो इसका परिणाम कलीसिया में वृद्धि और बढ़ोतरी के रूप में हुआ।

प्रेरितों के काम 6 में, समस्या प्रतिदिन भोजन के वितरण में थी। यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी और इब्रानी भाषा बोलने वाले यहूदी आपस में विवाद करने लगे। जब सात पुरुषों को नियुक्त किया गया ताकि व्यवस्था स्थापित की जाए, तब प्रेरितों के काम 6:7 कहता है, “परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को

माननेवाला हो गया,” जो हमें इसका तत्काल परिणाम बताता है। निस्संदेह, यरूशलेम की कलीसिया की वृद्धि के पीछे और भी कई कारण थे। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यवस्था स्थापित करना भी उन कारणों में से एक था।

प्रेरितों के काम 15 में, हम नए विश्वासियों के खतना कराने के विषय में उत्पन्न विवाद और झगड़े के बारे में पढ़ते हैं। यरूशलेम की सभा ने इस विषय पर व्यवस्था स्थापित करने और आगे के विवादों को समाप्त करने का निर्णय लिया। इसका परिणाम फिर से कलीसिया की दृढ़ता और संख्या में वृद्धि के रूप में हुआ।

## एकता का महत्व

भजन संहिता 133:1-3

<sup>1</sup> देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है

कि भाई लोग आपस में मिले रहें!

<sup>2</sup> यह तो उस उत्तम तेल के समान है,

जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर,

उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया।

<sup>3</sup> यह हेर्मोन की उस ओस के समान है,

जो सिंघों के पहाड़ों पर गिरती है!

यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।

मरकुस 3:24,25

<sup>24</sup> यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है?

<sup>25</sup> और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?

दैवीय व्यवस्था का उद्देश्य, एकता, मेल-मिलाप और शांति है। यह स्थानीय कलीसियाओं, सेवकों, सेवकाइयों और विश्वासियों को सही समझ के साथ मिलकर सामंजस्य में कार्य करने योग्य बनाता है।

एकता-अभिषेक, सामर्थ्य और आशीष लाती है।

जब नगर-स्तरीय कलीसिया मजबूत, अभिषिक्त और प्रभु की आशीष से परिपूर्ण होती है, तब हमें मसीह की महिमा करने और परमेश्वर के राज्य के लिए नगर को जीतने के हमारे साझा उद्देश्य को पूरा करने से कोई नहीं रोक सकता।

परमेश्वर के पासवान और सेवकों के पास यह अद्वैत अवसर है कि वे नगर-स्तरीय कलीसिया में एकता को बढ़ावा दें। अधिकांश विश्वासी अपनी ही स्थानीय कलीसिया से आगे नहीं देख पाते। परन्तु पासवानों के रूप में, हम अपने स्थानीय कलीसिया के सदस्यों को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि वे अपनी कलीसिया से आगे बढ़कर नगर-स्तरीय कलीसिया की शांति, एकता और सामर्थ्य को खोजें। हम विश्वासियों को एक-दूसरे के लिए अपने हृदय खोलने, एक-दूसरे के साथ साझा करने और प्रेम में एक-दूसरे की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

## शांति के बंधन

### इफिसियों 4:1-3

<sup>1</sup> इसलिये मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो,

<sup>2</sup> अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो;

<sup>3</sup> और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

हमें नम्रता, कोमलता, धैर्य और प्रेम से एक-दूसरे को सहते हुए चलने के लिए बुलाया गया है। हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि हम उस एकता को बनाए रखें जो आत्मा हमें देता है, शांति के बंधन में बंधे रहकर।

मेरा विश्वास है कि इस प्रयास का एक भाग यह भी है कि हम दैवीय व्यवस्था में चलें, सब कुछ उचित रीति से और क्रम में करें।

सिद्धांत संबंधी भिन्नताएँ झगड़े और विवाद का कारण नहीं बननी

चाहिए, जब तक कि हम मसीही विश्वास के मूल सिद्धांतों पर सहमत हैं। हम में से बहुत से लोग इस वाक्य का उपयोग करते हैं—“मुख्य बातों में एकता, गैर-अनिवार्य बातों में स्वतंत्रता”—फिर भी, हम गैर-अनिवार्य बातों पर बहुत अधिक झगड़ते हैं।

जबकि हम चाहते हैं कि सभी सेवक और विश्वासी, मसीह के सुसमाचार के पूर्ण आशीषों का आनन्द लें और आत्मा की सामर्थ्य की परिपूर्णता का अनुभव करें, फिर भी हमें आत्मा की अभिव्यक्तियों, दैवीय चंगाई, और आराधना के रूपों के विषय में व्यक्तिगत मतभेदों के कारण विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यह ठीक है यदि अन्य सहकर्मी सेवक ताली न बजाएँ, नृत्य न करें, अन्य भाषाओं में न बोलें, भविष्यवाणी न करें, और दुष्टात्माओं को न निकालें, जब तक कि वे सच में प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं और नगर में मसीह की महिमा करना चाहते हैं। हम फिर भी एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं और सहभागिता रख सकते हैं।

## सीमाओं के भीतर, फिर भी पूरी तरह स्वतंत्र

### 2 कुरिन्थियों 3:17

प्रभु तो आत्मा है: और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है।

हर बात को शिष्टता और उचित व्यवस्था से करने के लिये निम्नलिखित बातों की समझ आवश्यक है:

- कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें हमें पार नहीं करना चाहिए।
- आत्मिक अधिकार है जिसका हमें आदर करना चाहिए।
- काम करने का एक उचित तरीका है।
- उत्तरदायित्व है जिसे हमें बनाए रखना चाहिए।

फिर भी, इन सब के बीच, परमेश्वर का आत्मा जो स्वतंत्रता लाता

है, वह भी है। हर एक विश्वासी स्वतंत्र है कि वह परमेश्वर की बुलाहट और उद्देश्य में बढ़े और फले-फूले, स्थानीय कलीसिया और नगर-व्यापी कलीसिया की उन्नति के लिये कार्य करते हुए, सब कुछ शिष्टता और उचित व्यवस्था से करे।

## **कलीसियाओं के बीच पुल बनाना**

नगर की कलीसियाओं और सेवकाइयों को ऐसे पुल बनाने की आवश्यकता है जो उनके बीच संबंधों को मजबूत करें और नगर-व्यापी कलीसिया को एक साथ लाएँ, जिससे वह नगर में एक शक्तिशाली प्रभाव बन सकें।

पुल सरल तरीकों से बनाए जा सकते हैं। पासवानों और सेवकों का एक साथ मिलना और सहभागिता रखना एक महान पुल है जो कलीसियाओं के बीच संबंधों को मजबूत करता है। यह अत्यंत आवश्यक है कि नगर के पासवान आपस में मजबूत संबंध और सहभागिता बनाएं। सामान्यतः, यदि दो पासवान अपने आरंभिक दिनों से एक दूसरे को जानते हैं, तो वे अच्छे मित्र बन जाते हैं। परन्तु ऐसे मित्रता के समूहों को सामाजिक, संप्रदायिक, भाषाई, और सांस्कृतिक सीमाओं के पार अन्य पासवानों को भी सम्मिलित करने के लिये खोलना चाहिए।

कलीसियाओं के विश्वासियों को एक दूसरे से मिलने, बाँटने, और सहभागिता करने के लिये प्रोत्साहित करना एक और मजबूत पुल है। विश्वासियों को एक दूसरे के साथ सहभागिता करनी चाहिए ताकि वे एक दूसरे को प्रोत्साहित करें, न कि इस उद्देश्य से कि वे अन्य स्थानीय कलीसियाओं के विश्वासियों को अपनी कलीसिया में ले आएँ।

## विवादों का समाधान और कमज़ोरों को सुदृढ़ करना

मत्ती 5:23,24

<sup>23</sup> इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है,

<sup>24</sup> तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

गलातियों 6:1

हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

संभव है कि नगर की विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं के पासवानों, सेवकों, और विश्वासियों के बीच मतभेद उत्पन्न हों। ऐसी परिस्थितियों में, नगर के वे पासवान या सेवक जो आत्मिक रूप से परिपक्व हैं और दोनों पक्षों को सलाह दे सकते हैं, उन्हें आगे आकर समाधान, पुनर्स्थापना, और शांति लानी चाहिए।

यहाँ तक कि पासवानों और सेवकों को भी ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जिनके पास वे परामर्श, प्रोत्साहन, और सुदृढ़ता के लिये जा सकें। अधिक परिपक्व और वरिष्ठ सेवक नगर के युवा पासवानों और सेवकों को यह सहायता प्रदान कर सकते हैं।

यदि नगर में कोई सहकर्मी पासवान या सेवक किसी दोष में गिर जाता है, तो गलातियों 6:1 में दी गई शिक्षा का पालन करना चाहिए। किसी कमज़ोर भाई को नष्ट करने के बजाय, जो परिपक्व हैं उन्हें आगे आकर चंगाई और पुनर्स्थापना लानी चाहिए।

## नगर-व्यापी कलीसिया का पालन-पोषण करना

पासवानों, सेवकों, कलीसियाओं, सेवकाइयों, और विश्वासियों को मिलकर नगर-व्यापी कलीसिया का पालन-पोषण करना चाहिए।

- हम दैवीय व्यवस्था में चलकर नगर-व्यापी कलीसिया का पालन-पोषण करते हैं।
- हम एक दूसरे की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनते हैं और सावधान रहते हैं कि हम ऐसा कुछ न करें जिससे नगर-व्यापी मसीह की देह में विभाजन या झगड़ा उत्पन्न हो।
- हम नगर-व्यापी कलीसिया—अर्थात् नगर के विश्वासियों की देह—की एकता के लिये प्रार्थना करते हैं।
- हम एक दूसरे को प्रोत्साहित और उत्साहित करके नगर-व्यापी कलीसिया के जीवन में योगदान देते हैं।
- हम ऐसी बातें कहने या करने से बचते हैं जो झगड़ा, दुख, और विभाजन उत्पन्न करती हैं।
- हम एक दूसरे का सहारा बनने के लिये उपलब्ध रहते हैं—झगड़ों को सुलझाने में सहायता करते हैं, कमज़ोर भाई को प्रोत्साहित करते हैं, आदि।

## राज्य-मनसा का विकास

पासवानों, कलीसियाओं, सेवकों और सेवकाइयों के रूप में, हमें स्वतंत्रता, अलगाव और व्यक्तिवाद की दीवारों को गिराकर एक साथ आना चाहिए, ताकि हमारे नगर में परमेश्वर के राज्य के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। हमें व्यक्तिगत कलीसिया की वृद्धि से हटकर अपने नगर में परमेश्वर के राज्य की वृद्धि की ओर बढ़ना चाहिए। एकता का अर्थ यह नहीं है कि हर कलीसिया अपने-अपने काम में लगी रहे और एक-दूसरे से कोई लेना-देना न रखे। एकता तब होती है जब हर पासवान, हर कलीसिया, हर सेवकाई एक ही उत्साह से भरी हो कि हमारे नगर में परमेश्वर का राज्य स्थापित हो, और वे सक्रिय रूप से मिलकर इस कार्य को पूरा करने में लगे हों। हर एक का हृदय और ध्यान इस पर लगा हो कि सुसमाचार के द्वारा

नगर का परिवर्तन हो—न कि इस पर कि किसी एक कलीसिया या व्यक्तिगत सेवकाई की वृद्धि हो रही है या नहीं। जब परमेश्वर का हर सेवक अपनी स्वयं की कलीसिया और सेवकाई को बढ़ाने के लिए मर चुका होगा और परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए जागृत होगा, तब सच्ची एकता आएगी। हर स्थानीय कलीसिया और सेवकाई की वृद्धि, परमेश्वर के राज्य की वृद्धि का स्वाभाविक परिणाम होगा।

हमें अपने नगरों में प्रेरितिक / भविष्यद्वक्ता अगुवों की आवश्यकता है, जो वर्तमान समय की नगर-स्तरीय कलीसिया के लिए मजबूत नींव प्रदान कर सकें। ये अगुवे नगर-स्तरीय कलीसिया को एकता और राज्य की उन्नति की ओर ले जा सकेंगे। इन प्रेरितिक / भविष्यद्वक्ता अगुवों के पास वह हृदय, बुद्धि और क्षमता होगी कि वे विभिन्न संप्रदायों, सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाओं के पार जाकर कार्य कर सकें। हम सब, चाहे किसी भी संप्रदाय से जुड़े हों, ऐसे प्रेरितिक / भविष्यद्वक्ता अगुवों को पहचान सकेंगे, उनका सम्मान कर सकेंगे, और उनके नेतृत्व में एक साथ चल सकेंगे। हमें नगर में ऐसे कई प्रेरितिक / भविष्यद्वक्ता अगुवों की आवश्यकता होगी, जो बिना प्रतिस्पर्धा और कलह के, एक-दूसरे के साथ मिलकर राज्य की उन्नति के लिए कार्य कर सकें।

**आइए, हम सब मिलकर राष्ट्रों तक पहुँचें!**

# ऑनलाइन हमसे जुड़ें (JOIN US ONLINE)

## अंग्रेजी (ENGLISH)

<https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore>  
<https://instagram.com/allpeopleschurchbangalore>  
<https://facebook.com/apcwo>  
<https://youtube.com/apcbiblecollege>  
<https://instagram.com/apcbiblecollege>  
<https://youtube.com/APCMusicindia>  
<https://www.youtube.com/@apc-free-christian-books>  
<https://youtube.com/@chrysalislifecounseling>  
<https://instagram.com/ChrysalisLifeCounseling>

## हिंदी (HINDI)

<https://youtube.com/APCHindi>  
[https://www.instagram.com/apc\\_bangalore\\_hindi](https://www.instagram.com/apc_bangalore_hindi)

## क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

**ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।**

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, **“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु**

**परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है” (रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कड़्यों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

**“जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी” (प्रेरितों के काम 10:43)।**

**“कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुएओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा ” (रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुएओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुएओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

# ऑल पीपल्स चर्च के बारे में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनो के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थ्य बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सटश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाइट को भेंट दें: [apcwo.org/locations](http://apcwo.org/locations) या इस पते पर ई-मेल भेजें: [contact@apcwo.org](mailto:contact@apcwo.org)

# निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival  
A Real Place Called Heaven  
A Time for Every Purpose  
Ancient Landmarks  
Baptism in the Holy Spirit  
Being Spiritually Minded and Earthly Wise  
Biblical Attitude Towards Work  
Breaking Personal and Generational Bondages  
Change  
Code of Honor  
Divine Favor  
Divine Order in the Citywide Church  
Don't Compromise Your Calling  
Don't Lose Hope  
Equipping the Saints  
Foundations (Track 1)  
Fulfilling God's Purpose for Your Life  
Gifts of the Holy Spirit  
Giving Birth to the Purposes of God  
God Is a Good God  
God's Word—The Miracle Seed  
How to Help Your Pastor  
Integrity  
Interpreting Scripture  
Kingdom Builders  
Laying the Axe to the Root  
Living Life Without Strife  
Marriage and Family

Ministering Healing and Deliverance  
Offenses—Don't Take Them  
Open Heavens  
Our Redemption  
Receiving God's Guidance  
Revivals, Visitations and Moves of God  
Shhh! No Gossip!  
Speak Your Faith  
The Conquest of the Mind  
The End Times  
The Father's Love  
The House of God  
The Kingdom of God  
The Mighty Name of Jesus  
The Night Seasons of Life  
The Power of Commitment  
The Presence of God  
The Redemptive Heart of God  
The Refiner's Fire  
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power  
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues  
Timeless Principles for the Workplace  
Understanding the Prophetic  
Water Baptism  
We Are Different  
Who We Are in Christ  
Women in the Workplace  
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाउन लोड करने हेतु कृपया **[apcwo.org/books](http://apcwo.org/books)** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाइट **[apcwo.org/sermons](http://apcwo.org/sermons)** को भेंट दें।

# क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- |                                                         |                                      |
|---------------------------------------------------------|--------------------------------------|
| • किशोरों                                               | • व्यवहार सम्बंधी विकार              |
| • व्यक्तिगत समायोजन                                     | • व्यक्तित्व विकार                   |
| • सम्बंधपरक चुनौतियां                                   | • मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं  |
| • शिक्षा में कम सफलता पाने वाले                         | • तनाव / आघात                        |
| • कार्य सम्बंधित मुद्दे                                 | • शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल |
| • परिवार / दम्पति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं | • आध्यात्मिक मुद्दे                  |
| • माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी                 | • जिंदगी की सीख                      |

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

**वेबसाइट:** [chrysalislife.org](http://chrysalislife.org)

**फ़ोन:** +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998

**ईमेल:** [counselor@chrysalislife.org](mailto:counselor@chrysalislife.org)

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

# ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरित की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

**खाता नाम:** All Peoples Church

**खाता संख्या:** 50200068829058

**IFSC कोड:** HDFC0004367

**बैंक:** HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

**कृपया ध्यान दें:** ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें [apcwo.org/give](http://apcwo.org/give)

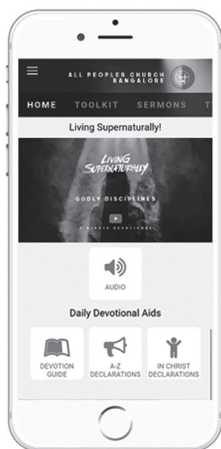
उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

**धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!**

DOWNLOAD THE FREE APP!



*Search for*  
"All Peoples Church Bangalore"  
in the App or Google play stores.



*A daily 5-minute video devotional.*

*A daily Bible reading and prayer guide.*

*5-minute Sermon summary.*

*Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.*

*Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.*

**IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!**

## निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:



ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें  
“ऑल पीपल्स चर्च (APCWO)”/  
All Peoples Church Hindi



विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।  
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।  
अगर आपको यह पसंद आए, तो  
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!



# ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

[apcbiblecollege.org](http://apcbiblecollege.org)

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बेंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर जोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस:** कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखने के लिए [apcbiblecollege.org/elearn](http://apcbiblecollege.org/elearn)

**ऑनलाइन आवेदन** हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाइट का अनुसरण करें: [apcbiblecollege.org](http://apcbiblecollege.org)

यह पुस्तक नगर-व्यापी कलीसियाओं में सेवकों, कलीसियाओं और विश्वासियों के बीच दैवीय व्यवस्था की कमी को उजागर करती है। आपको इस बात पर फिर से विचार करने की चुनौती दी जाएगी कि आप परमेश्वर के सेवक या यीशु मसीह के विश्वासी के रूप में अपने आप को कैसे संचालित करते हैं। यह पुस्तक स्पष्ट, खुली और हृदय से लिखी गई है! यदि आपके पास सत्य का सामना करने का साहस है और आप परिवर्तन के लिए तैयार हैं—तो इसे ज़रूर पढ़िए!

यदि परमेश्वर के लोग दैवीय व्यवस्था में चलना सीख लें, तो कलीसियाओं, सेवकों, सेवकाइयों और विश्वासियों के बीच कम कलह, विभाजन और प्रतिस्पर्धा होगी। यह पुस्तक बड़ी चिंता और सच्ची इच्छा के साथ लिखी गई है कि हमारे नगरों, समुदायों और स्थानीय भौगोलिक क्षेत्रों में सेवकों, कलीसियाओं और विश्वासियों के बीच दैवीय व्यवस्था स्थापित हो। जिन विषयों पर यहाँ चर्चा की गई है, वे नगर-व्यापी कलीसिया के दृष्टिकोण से हैं, परंतु वे किसी भी समुदाय, नगर या क्षेत्र के लिए समान रूप से सत्य हैं, जहाँ कलीसियाएँ, सेवक, सेवकाइयाँ और विश्वासी साथ-साथ रहते और मिलकर कार्य करते हैं।

इस पुस्तक में प्रस्तुत दिशानिर्देश एक ही आधार पर आधारित हैं—कि सब काम शांति और व्यवस्था के साथ किए जाएँ। हमारी इच्छा है कि नगर-व्यापी कलीसिया, और किसी भी समुदाय की कलीसिया, वैसी कलीसिया बने जैसी यीशु मसीह चाहते हैं, ताकि हर बात में यीशु मसीह की महिमा हो!

### **All Peoples Church & World Outreach**

# 319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,  
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043  
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617

Email: [contact@apcwo.org](mailto:contact@apcwo.org)

Website: [apcwo.org](http://apcwo.org)

